श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीं श्रियै नमः

श्री गुरवे नमः

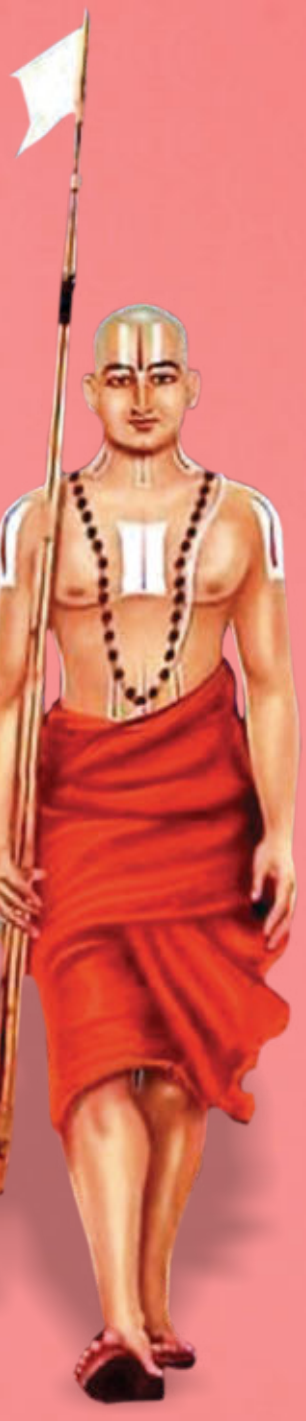

सुदर्शनालोक 2021

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)

वै. श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य
स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज

श्री लक्ष्मीनारायण भगवान्

गुरु - परंपरा

कल्पायुषां स्थानजयात् पुनर्भवात्
क्षणायुषां भारतभूजयो वरम्।।

कहा गया है कि -ब्रह्मा के कल्प जितना जीवन जीने वाले देवगण बार-बार देवलोक में ही जन्म पाते हैं अर्थात् उनको मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती जबकि भारतभूमि में जन्म लेने वाले कीट-पतंग भी गुरुजनों के चरण रज से मोक्ष पा जाते हैं।

यहां की धरती में भगवान का नाम है, गुरुओं के उपदेशों की गूंज से यहां मानवता की स्थापना होती है।

हमारे श्री सद्गुरुदेव भगवान (वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज) ने इसी पावन धरती पर पाड़ला (करौली, राजस्थान) नामक गांव में मनुष्य देह को धारण किया, जिन्होंने थोड़े ही समय में मानवता की राह पर लाखों लोगों को चलना सिखाया। मनुष्य स्वरूप को माध्यम बनाने वाले इन दिव्यात्मा ने बालपन से ही धार्मिक क्रियाकलापों में रूचि लेना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने अनेकानेक प्रकार की कठिन तपश्चर्याओं को कर श्री भगवान की कृपा प्राप्त की और धीरे-धीरे मानवता के संदेश के प्रचार-प्रसार के लिए एक संस्थान स्थापित कर दिया। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनके शिष्यों के विशाल समूहों को देखने से मिलता है।

उनका दिव्य व्यक्तित्व बड़े-बड़े राजाओं, महाराजाओं व देवगणों के रूप लावण्य को भी पीछे छोड़ता था। जिसपर उनकी एक नजर पड़ गई उसका जीवन धन्य हो गया, ऐसी तेजोमय दृष्टि।

उन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति को जाति-मजहब की संकीर्णताओं से ऊपर उठाकर केवल और केवल मानव होना सिखाया। उनके इस आंदोलन ने मानवता को नई राह और मजबूती प्रदान की। जातियों में बंटे समाज को एकसूत्र में बांधकर श्रीमन् नारायण की भक्ति में लगा दिया। ऐसी भक्ति में कि भक्त और भगवान के बीच कुछ भी शेष ना रह पाये।

बाबा के इस दिव्य तेज को संजोकर समस्त संसार को को अध्यात्म के तेज से आलोकित कर रहे वर्तमान पीठाधीश्वर अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के चरित्र को भी शब्दों में नहीं बांधा जा सकता अपितु उनके दिव्य साकार कार्य अवश्य ही लोगों को जीवन जीने की कला सिखा रहे हैं।

अपने दिव्य आलोक से असंख्य जनों के हृदयों को प्रकाशित करने वाले, स्त्री-पुरूष को समान अवसर व स्थान समाज में दिलवाने वाले, असंख्य जनों को गृहस्थ जीवन में ही सन्यास का सुख प्रदान कराने वाले, केवल और केवल मानवता को एक धर्म व विचार स्थापित करने वाले, असंख्य भटकों को सही राह दिखाने वाले, आचार्य सम्प्रदाय को जन-जन तक पहुंचाने वाले, शुद्ध भक्ति मार्ग के प्रवर्तक व पवित्रता एवं सदाचार के बोधक श्री गुरु महाराज ही सब शिष्यों के लिए सर्वोच्च सत्ता हैं। वह भगवान का बोध कराने वाले होने से भी भगवान के पूर्व ही नाम लेने योग्य हैं।

हमारा सौभाग्य है कि हमें आचार्यकृपा प्राप्त हुई और हम श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम का आश्रय प्राप्त कर सके। हमसे पहले भी असंख्य ने यहां कृपा प्राप्त की और हमारे बाद भी असंख्य यहां कृपाएं प्राप्त करेंगे।

हमारे आचार्यश्री ऐसे आचार्य सम्प्रदाय के अभिन्न अंग हैं जिनके प्रवर्तक आचार्य भगवान् श्रीमन् नारायण ही हैं। श्री लक्ष्मी जी द्वारा जीवों के कल्याण की बात करने पर श्री भगवान ने उन्हें अष्टाक्षर मंत्र, द्वय मंत्र आदि सभी मंत्रों का रहस्य बताया। श्री लक्ष्मी जी ने इन रहस्यों को श्री विष्वकसेन जी को प्रदान किया। उन्होंने श्री शठकोप स्वामी को यह बताया, मुनिजी से श्रीनाथ मुनिस्वामी जी को यह प्राप्त हुआ। तदुपरांत श्री पुण्डरीकाक्ष स्वामी व उनके बाद श्री राममिश्र स्वामी जी को यह मंत्र प्राप्त हुए। श्री राममिश्र स्वामी जी से श्री यामुनाचार्य स्वामी जी को व उनके उत्तराधिकार को श्री महापूर्ण स्वामी जी ने संभाला, जिन्होंने श्री रामानुज स्वामी जी को यह मंत्र प्रदान किये।

आज आचार्य सम्प्रदाय को भाष्यकार रामानुज स्वामी जी के ही नाम पर रामानुज सम्प्रदाय के नाम से भी जाना जाता है। भाष्यकार रामानुज स्वामी जी ने श्रीभाष्य में लिखा है -

तर्काप्रतिष्ठानादपि।। 2.1.11

अर्थात् जो श्रुति सम्मत नहीं होता, उस तर्क की कोई प्रतिष्ठा नहीं होती। ऐसे में हम आपको जो गुरु परंपरा दिखा और बता रहे हैं वह श्रुति सम्मत भी है और प्रतिष्ठा योग्य भी है।

हमारे आचार्य एक श्रुतिसम्मत परंपरा में आए हैं, कोई मन्मना धर्म प्रतिष्ठित नहीं किए हैं। अतः यहां दिया जाने वाला संदेश प्रतिष्ठा योग्य है। ऐसा श्रीभाष्य द्वारा भी प्रतिष्ठित जान पड़ता है।

हमारे आचार्यश्री की वाणी में सभी सद्ग्रंथों का सरल भाषा में सार दे दिया गया है। सीधी और सरल भाषा में श्री गुरु महाराज कहते हैं कि उस (भगवान) पर विश्वास करके तो देखो, वो तुम्हारे सब दुख दूर कर देगा। मैं तुम्हारी वकालत करूंगा।

श्री महाराज द्वारा जीवमात्र के कल्याणार्थ ही श्री सिद्धदाता आश्रम की स्थापना की। इसी आश्रम परिसर में एक विशाल श्री लक्ष्मी नारायण दिव्य धाम (मन्दिर) की स्थापना कर एक शक्तिपीठ का उदय भी किया गया है। श्रीगुरु महाराज कहते हैं कि यहां अनन्त काल तक असंख्य जनों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती ही रहेगी। आचार्य सम्प्रदाय की कीर्ति बढ़ाने वाले श्री सद्गुरुदेव भगवान ने सर्व कार्यों को सिद्ध करने वाली मां सिद्धदात्री की शक्तियों को यहां स्थापित किया है। हमारी आपश्री से प्रार्थना है कि अपने जीवन के अमूल्य समय में थोड़ा समय निकालकर श्री गुरु परंपरा में स्थापित इस दिव्य गंगा में मानसिक स्नान करने अवश्य ही आइए।

श्रीमते रामानुजाय नमः श्रीं श्रियै नमः श्री गुरवे नमः

सुदर्शनालोक

स्मारिका | 2021

आशीर्वाद प्रदाता
वैकुण्ठवासी स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज

संरक्षक
अनन्तश्री विभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा
पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य
स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज

परामर्श मण्डल
डी.सी. तंवर
जगदीश सोमानी

सम्पादक
शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'

डिजाइनिंग एवं फोटो
नवल किशोर शर्मा

प्रकाशक
श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)
जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट
बड़खल-सूरजकुंड मार्ग, सैक्टर-44, फरीदाबाद-121012 (हरियाणा) भारत
दूरभाष : 0129- 2419717, 2419555, 9910907109
website : www.shrisda.org email: info@shrisidhdataashram.org

अनुक्रम.....

क्र.सं	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	गुरु परंपरा		2
2.	सम्पादकीय	शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'	5
3.	संदेश		6-29
4.	आत्मा के लिए औषधि है भगवान का नाम	वै. श्रीमद् ज.गु.रा.स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज	30-32
5.	जानकारी देने का दंभ भरने वालों की कमी नही	श्रीमद् ज.गु.रा.स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी	33-35
6.	सदा प्रासंगिक है गीता	महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री	36-38
7.	Contribution of Śri Rāmānuja to Interreligious Harmony	Prof. M.A.Lakshamithathacharya	39-41
8.	BEYOND THE DARKNESS	Dr. Karan Singh	42-43
9.	Scriptural Tradition and Rebirth	K.N. Rao	44-47
10.	दुनिया में बाबा के नाम का डंका..		48-49
11.	श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) के बारे में...		50
12.	बढ़िया स्वास्थ्य, हजार नेमतों से अच्छा		51
13.	संस्कृत द्वारा संस्कृति का प्रसार		52-53
14.	पुस्तक से बड़ा कोई मित्र नहीं		54
15.	अन्नपूर्णा का कृपा भण्डारा		55
16.	आस्था केंद्र : वैकुंठवासी बाबा का समाधि स्थल		56-57
17.	जनकल्याणकारी गतिविधियां		58-59
18.	कोरोना काल में लाखों लोगों को कराया भोजन		60-61
19.	गौधन की सेवा		62
20.	कलियुग केवल नाम आधारा		63
21.	नवीकरणीय ऊर्जा की ओर आश्रम का बड़ा कदम		64-65
22.	खबरों में आश्रम		66-67
23.	गुरु दर्शन को पहुंचे विशिष्ट भक्तजन		68-71
24.	संत मिलन		73
25.	श्री गुरुदेव महाराज के प्रवास कार्यक्रम		74-75
26.	मंगल नववर्ष, मंगल जन्मोत्सव		76-77
27.	फूलों की होली, होली के फूल		78-79
28.	रामजी की निकली सवारी		80
29.	जयकारा वीर बजरंगी		81
29.	त्रयोदशम् ब्रह्मोत्सव		82-93
30.	भाष्यकार स्वामी की जय		84
31.	भगवान नृहसिंह जयंती		85
32.	बाबा! बहुत याद आते हो		86-87
33.	बाबा, तेरी जय-जयकार		88-89
34.	गुरु कुम्हार, शिष्य कुंभ है		90-91
36.	श्री गुरुमाताजी की प्रथम पुण्यतिथि		92-93
35.	लगे बोल बम के जयघोष		94-93
36.	नन्द के आनन्द भयो, जय कन्हैया लाल की		96-97
37.	नवरात्र एवं विजयादशमी		98-99
38.	दान दिए न धन घटे		100
39.	दीपमालिकाओं से समृद्धि का स्वागत		101-103
40.	परम कृपालु गोवर्धन महाराज की जय		104
41.	गावो विश्वस्य मातरः		105
42.	श्री सिद्धदाता आश्रम आने का मानचित्र		106
43.	श्री सिद्धदाता आश्रम - मुख्य पर्व एवं अन्य कार्यक्रम का अनुक्रम		107
44.	श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम - समय सारणी		108

सम्पादकीय

शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'
संपादक - श्री सुदर्शन संदेश (मासिक) एवं सुदर्शनालोक (वार्षिकी)

ज्यादा उम्मीदें मत पालो

जीवन में आपको अनेक लोग मिलते हैं, मिलेंगे। जब तक जर में जान है, तब तक आपको लोग मिलते रहेंगे। लेकिन मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि आप किसी से उम्मीद मत पालो।

वास्तव में यही उम्मीदें लोगों की परेशानी का असली कारण होती हैं। यही उम्मीदें आपसे अनेक प्रकार के गलत काम करवाती हैं।

मेरा मानना है कि जब आप किसी से उम्मीद बांधते हैं तो उन्हें पूरा होने की भी हसरत बांध लेते हैं। यही हरसतें जब पूरी नहीं होती हैं तो आपको उस व्यक्ति पर गुस्सा आता है।

समस्या यहीं से शुरू होती है।

जब आप गुस्सा करते हैं तो आपके अपने गुणों का क्षय होने लगता है। उस भगवान ने आपको अक्षय गुणों के साथ बनाया है लेकिन आप सोचिए जब आपके गुणों का क्षय होने लगे तो आपको कैसा लगेगा। निश्चित तौर पर यह कोई पूछने वाली बात नहीं है। आपको दर्द होगा क्योंकि आपके अंदर कुछ टूट फूट रहा है, कुछ बिखर रहा है। इसलिए आपको दर्द होगा ही।

लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस दर्द की दवा क्या है? वास्तव में इसकी दवा किसी मेडिकल स्टोर पर नहीं मिलने वाली है क्योंकि यह तो आपके ही पास है। जानते हैं क्या है वो दवा?

यह दवा हैं आप खुद।

दुनिया आपको बता रही है कि आप गुस्सा मत करिए, लेकिन जैसा कि मैं शुरुआत में बता चुका हूं कि गुस्सा किस कारण से उत्पन्न होता है। इसलिए पुनः दोहरा रहा हूं कि किसी से उम्मीद रखना गलत है। यह उम्मीदें ही आपसे गलत कार्य करवाती हैं। लेकिन मानव स्वभाव है कि वह कुछ तो करेगा। ऐसे में आप किसी से उम्मीद न रखें तो क्या करेंगे। मेरा मानना है कि आप किसी की उम्मीद बन जाएं। आपसे जो बन सके, वो अवश्य करें। साथ ही संबंधित व्यक्ति को बता दें कि आप अधिकतम इतना कर सकेंगे। लेकिन यह आपके द्वारा संभावित सहयोग से कम ही बताइए। हो सकता है कि आप पूरा सोचा हुआ न कर सकें। इसलिए जो कर सकते हैं उससे कम ही बताइए।

बस यह छोटी सी चाबी है जिससे गुस्से का ताला खुल सकता है। अगर आपको गुस्सा ही नहीं आएगा तो बाकी समस्याएं शायद उत्पन्न ही न हों। करके तो देखिए।

एक और महत्वपूर्ण बात ...कभी आपने ऐसे व्यक्ति जरूर देखे होंगे जो मानते हैं कि वो किसी गंभीर रोग से पीड़ित हैं लेकिन चिकित्सकीय दृष्टि से वह किसी भी रोग के शिकार नहीं हैं। लेकिन उनकी इस बात का क्या जब वह कहते हैं कि उनके इस अंग में बेहद दर्द होता है, उनको कोई बालों से खींचता हुआ ले जा रहा था आदि आदि।

एक चिकित्सक सामान्य रूप से उनके शरीर की जांचें करवाएगा और सभी जांच स्पष्ट होने के बाद उनके पूरी तरह से स्वस्थ होने और घर जाने की बात कह देगा।

लेकिन आपको पता है कि वह व्यक्ति ठीक महसूस नहीं करता और लगातार एक अदृश्य रोग से पीड़ित रहता है और पीड़ाएं झेलता है। तब तक पीड़ाओं के दौर चलते रहते हैं जब तक ऐसे व्यक्ति की कोई सुनने वाला नहीं मिल जाता है।

ऐसे व्यक्ति वास्तव में किसी रोग का शिकार नहीं हैं बल्कि कुछ न कह पाने का शिकार हैं। ऐसे व्यक्ति आपको भी मिलें तो उनकी तसल्ली से सुनें। यूरोप में ऐसे अनेक क्लिनिक हैं जहां पर ऐसे लोगों का इलाज केवल उनसे बात कर किया जाता है। इन क्लिनिकों को बिहेवियरल थैरेपी का नाम दिया जा रहा है तो कोई इमोशंस थैरेपी का नाम दे रहा है।

वास्तव में यह कार्य हिंदुस्तान में तो हजारों हजार वर्षों से होता आ रहा है। यहां परिवारों में मुखिया की भूमिका यही होती है। यदि आपकी मुखिया से नहीं बनती तो मंदिरों में मूर्ति भी प्रथम दृष्टया यही कार्य करती हैं। वहीं हमारे गुरुजन भी यही कार्य करते हैं। आप याद करें हमें बचपन से यही सिखाया जाता है कि भगवान से प्रार्थना करो, वो जाने उसका काम जाने। अरे, अपनी समस्या गुरु जी को बता दो, वो अपने आप सही कर देंगे।

यह कह देना ही ऐसे अधिकांश रोगों का इलाज है जो रोग वास्तव में हैं नहीं बल्कि हमने इन्हें ओढ़ लिया है। अपने मन के गुबार को निकालें अवश्य। तभी वो रोग मिटेंगे जो वास्तव में हैं ही नहीं।

जय गुरुदेव!

SRIMANNARAYANA RAMANUJA YATHIBHYO NAMAHA

Tridandi Chinna Srimannarayana Ramanuja Jeeyar Swamy
JEEYAR INTEGRATED VEDIC ACADEMY
SRIRAM NAGARAM -509325
R.R DISTRICT. T.S.

जय श्रीमन्नारायण !

प्रिय भगवद्बन्धो
जय श्रीमन्नारायण
अनेकानि मङ्गलाशासनानि!

जानकर हर्ष हुआ कि श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा अपनी वार्षिकी **सुदर्शनालोक-2021** का इस वर्ष भी प्रकाशन हो रहा है। हमें विश्वास है कि पत्रिका की सार्थकता सनातन धरोहर के प्रचार व प्रसार में सिद्ध होगी। जिससे धर्मप्रेमी जन लाभ उठावेंगे। हमें जानकर अच्छा लगता है कि प्रकाशन के माध्यम से श्री गुरु महिमा, सत्संग, धार्मिक पर्वों एवं धर्म गुरुओं के सारगर्भित लेख जन-जन तक पहुंचेंगे।

वास्तव में भारतभूमि अनादिकाल से महान् साधु-सन्तों, महात्माओं एवं ऋषि-मुनियों की चिन्तन मनन की कर्म भूमि रही है। यहां समय-समय पर महान् विभूतियों ने जन्म लेकर अपने तप, त्याग, कर्मयोग एवं ज्ञान से प्राणिमात्र का कल्याण किया। इसी परंपरा में वैकुण्ठवासी अनन्त श्रीविभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित 'श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम' एवं 'श्री सिद्धदाता आश्रम' अपनी विशिष्ट भूमिका निभा रहा है। यह स्थान अति पावन व चमत्कारिक है। वर्तमान में श्रद्धेय श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के पावन सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में श्री गुरु महाराज जी की शिक्षाओं को असंख्य भक्तगणों तक पहुंचाकर उन्हें मोक्ष के सरल मार्ग पर ले जा रहे हैं।

इस अलौकिक कार्य को निष्पादित करने के लिए मैं सभी आश्रम बंधुओं को मंगलाशासन करता हूं।

जयश्रीमन्नारायण

18.12.2020

(श्री श्री श्री त्रिदण्डि चिन्न श्रीमन्नारायण रामानुज जीयर स्वामी जी)

।। श्री ।।
।। श्रीमते रामानुजाय नमः ।। ।। श्री वादिभीकर महागुरवे नमः ।।
श्री श्रीनिवास वेंकटेश्वर तिरुपतिबालाजी भगवान के दिव्यश्रीपादुका सेवक :-
श्री श्री जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी राजनारायणाचार्य जी
अध्यक्ष
श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर देवस्थानम्
भक्ति वाटिका, रामानुजाचार्य मार्ग, कसया रोड, देवरिया-274 001 (उ० प्र०) दूरभाष : (05568) 241479
ईमेल : bhaktivatika@gmail.com, वेब : www.bhaktivatika.com

क्रमांक .....

दिनांक : 13.12.2020

श्रियै नमः
"मंगलाशासन पत्र"

श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम की स्थापना सिद्धपुरूष श्री 1008 जगद्गुरू रामानुजाचार्य हरियाणा एवं इन्द्रप्रस्थ पीठाधीश्वर स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज के द्वारा हुई थी जिसकी महिमा से विश्व के प्राय लोग परिचित हैं। महाराज श्री ने जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा जनहित में मानवमात्र की सेवा का दृढ़ संकल्प लिया था जिसका सुन्दर ढंग से संचालन वर्तमान गद्दीनसीन श्री 1008 जगदगुरू रामानुजाचार्य हरियाणा एवं इन्द्रप्रस्थ पीठाधीश्वर स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज कर रहे हैं। वर्तमान पीठाधीश्वर जी विद्या, विनय सम्पन्न सहज, मृदुभाषी एवं अपने पूर्व के आचार्य की तरह 'सिद्ध' हैं। सुना है इनके श्रीलक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, फरीदाबाद (हरियाणा) से कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं लौटता है अस्तु। इस महिमाशाली संस्था के द्वारा प्रकाशित होने वाली **'सुदर्शनालोक' स्मारिका 2021 ई.** की मंगलाशासन करते श्रीकृष्ण भगवान से प्रार्थना करता हूं कि ये स्मारिका भविष्य में भी सम्पूर्ण विश्व को आदर्श जीवन जीने की शिक्षा देती रहे।

'इति शम्'

स्वामी राजनारायणाचार्य

(श्री जगद्गुरु रामानुजाचार्य
स्वामी राजनारायणाचार्य जी महाराज)

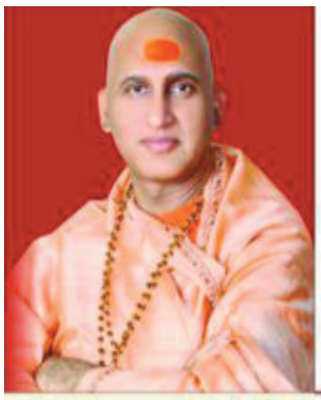

Junapeethadheeshwar Acharya
Mahamandleshwar
Swami Avdheshanand Giri

Founder :
Prabhu Premi Sangh Charitable Trust
Prabhu Prem Ashram, Jagadhari Raod,
Ambala Cantt. 133 006 (Haryana) INDIA
Phones : +91 171 2699335
Fax : +91 171 2699367
Website : www.prabhupremisangh.org
e-mail : pps.ambala@gmail.com
prabhuprem@hotmail.com
| AvdheshanandG

President
Hindu Dharma Acharya Sabha
The Voice of Collective Consciousness

President
Bharat Mata Mandir
Samanvay Seva Trust
Samanvay Kutir, Sapt Sarovar,
Bhupatwala, Haridwar - 249 410
Ph. +91-1334-260256; 326190
Fax +91-1334-260981
email - bharat.samanvaya@yahoo.in

॥श्री कृपा॥

Master Seat :
HARIHAR ASHRAM
M.G. Road, Kankhal, Haridwar - 249 408 (Uttarakhand) INDIA
Phone : +91 1334 246974 • Fax : +91 1334 246973

दिनांक – 26.12.2020

– शुभकामना सन्देश –

अत्यंत आत्मीय **स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज,**
अधिपति, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम,
श्री सिद्धदाता आश्रम, (फरीदाबाद)

सादर प्रभु स्मरण! ओम नमो नारायणाय !!

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा **'सुदर्शनालोक स्मारिका वर्ष 2021'** का प्रकाशन हो रहा है।

लोकसंग्रह के साथ साहित्य जब लोकोपकार में प्रवृत्त हो जाएं तो यह और भी समृद्ध हो जाता है। वेद-उपनिषदों का दिव्य ज्ञान, महापुरुषों के जीवन प्रसंग, कला और संस्कृति से संबंधित अभिलेख तथा ज्ञान-विज्ञान की अनेक उत्कृष्ट विधाएं पुस्तकों द्वारा ही संरक्षित और सुरक्षित हैं, इसलिए साहित्य लेखन और सृजन भगवदीय कार्य हैं।

वर्तमान कालखण्ड संस्कृति-संस्कार एवं आध्यात्मिक मूल्यों के क्षरण का काल है, जिसमें मनुष्य की रचनात्मक प्रवृत्तियों का ह्रास हो रहा है। मानव-मन में सृजन और पठन-पाठन की अभिरुचियाँ भी कम हो रही हैं। 'साहित्य' समाज का दर्पण होता है और समाज की मनोदशा का निर्धारण भी करता है, इसलिए सकारात्मक सृजन के द्वारा स्वस्थ्य और सुसंस्कृत समाज की संस्थापना का प्रयत्न बड़ा पुरुषार्थ है। यह साहित्य का अलंकरण और प्रतिमान बनकर दीर्घकाल तक साधकों की आध्यात्मिक अभीप्साओं को अभिसिंचित कर आत्म-जागरण हेतु प्रेरित करेगी। आपकी सृजनात्मकता और लोकोपकारी प्रवृत्तियां अत्यन्त आह्लादित करने वाली हैं।

इस कठिन समय में आध्यात्मिक संस्था **'जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट'** अनेक पारमार्थिक कार्यों में संलग्न हैं। इसके साथ मेरी अनेक संवेदनाएं जुड़ी हुई हैं। इस दृष्टि से आपके द्वारा जो दिव्य दैवीय कार्यों का संचालन और समायोजन हो रहा है, उसे देखकर मैं अत्यन्त हर्षित हूँ।

'सुदर्शनालोक स्मारिका वर्ष 2021' के प्रकाशन पर मेरी अनेक शुभकामनाएं !!

शुभेच्छु

(स्वामी अवधेशानन्द गिरि)

शुभकामना संदेश

भौतिकवादी विज्ञान के बढ़ते प्रभाव में निःसन्देह बाह्य सुख सुविधाओं का आश्चर्यजनक विकास और विस्तार हुआ है, लेकिन उतनी ही तीव्रता से जिस प्रकार मूल्यों, आदर्शों, मर्यादाओं का ह्रास हुआ है और हो रहा है-वह गम्भीर चिन्तनीय है। संत और उन द्वारा निर्मित मठ-मन्दिर, आश्रम, संस्थान इसी का समाधान हैं। संत अपने आप में एक प्रेरणा हैं जीवन मूल्यों, पारिवारिक-सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों की तथा धर्म स्थल इन मूल्यों को जन-जन की स्वीकार्यता बनाने का केन्द्र।

पूज्यपाद जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्री स्वामी सुदर्शनाचार्य जी द्वारा संस्थापित और वर्तमान में पूज्य पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज द्वारा कुशलता पूर्वक संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम अध्यात्म का ऐसा पावन प्रेरक स्थल है जहाँ से समय-समय पर अनेकानेक सेवाओं के साथ अपनी सांस्कृतिक मूल्यगत विरासत को भी जन-जन को सुलभ प्रेरणा बनाने का स्तुत्य समर्पित प्रयास हो रहा है। इन्हीं प्रयासों में वर्ष 2021 की '**सुदर्शनालोक स्मारिका**' का प्रकाशन और साथ ही सरल सुबोध साहित्य को सुलभ करवाने का संकल्प वास्तव में एक आदर्श पहल है। सांस्कृतिक गरिमा के इन अनूठे प्रयासों में हमारी हार्दिक सद्भावना सदैव आपके साथ है।

शभेच्छु
(गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द)

श्री कृष्ण कृपा धाम
परिक्रमा मार्ग, श्रीवृन्दावन (मथुरा) 281121 (8899363611/22)
Email: gieogita@gmail.com, Website : gieogita.org

ओ३म्

पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट)
Patanjali Yogpeeth (Trust)

क्रमांक
S.No. : .....

दिनांक : 21.12.2020

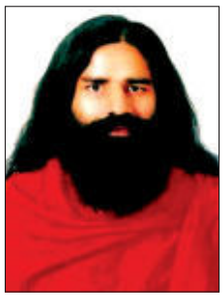

शुभकामना संदेश

हमारा देश प्राचीनकाल से अपनी समृद्ध वैदिक संस्कृति के लिये विश्व विख्यात है। श्री सिद्धदाता आश्रम तथा जनहित सेवा धर्मार्थ न्यास द्वारा किये जा रहे भारतीय संस्कृति व संस्कृत का संवर्धन, वैदिक अध्ययनों का प्रचार-प्रसार, गौ-वंश के संरक्षण आदि कार्य अति सराहनीय व राष्ट्र को गौरवान्वित करने वाले हैं। जनहित सेवा धर्मार्थ न्यास द्वारा संचालित सिद्धदाता आश्रम दशकों से जनकल्याण और धर्मार्थ के कार्य में संलग्न है। आश्रम ने जनहितार्थ संचालित धर्मार्थ चिकित्सालय में रोगियों को निःशुल्क स्वास्थ्यलाभ प्रदान कर मानवसेवा का अतुलनीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

न्यास द्वारा संचालित शिक्षा, नामदान (दीक्षा), सत्संग, स्वास्थ्य के जागरुकता, अध्यात्मिक ज्ञान और आत्म-प्राप्ति के प्रचार के लिये समय-समय पर दिव्य सत्संग और लोक कल्याण के विभिन्न कार्य सराहनीय हैं।

प्रसन्नता का विषय है कि जनहित सेवा धर्मार्थ न्यास अपनी वार्षिक स्मारिका 2021 **सुदर्शनालोक** का प्रकाशन कर रहा है। आशा है सिद्धदाता आश्रम तथा जनहित सेवा धमार्थ न्यास जनसेवा व राष्ट्रसेवा के कार्यों को ऐसे ही गतिमान रखेंगे। स्मारिका हेतु मेरे हृदय की गहराईयों से अनन्त शुभकामनायें।

(स्वामी रामदेव)
अध्यक्ष

सम्पर्क कार्यालय : महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग, निकट बहादराबाद, हरिद्वार-249405, उत्तराखण्ड (भारत)
Contact Office : Maharishi Dayanand Gram, Delhi-Haridwar National Highway, Near Bahadrabad, Haridwar-249405, Uttarakhand, India
Tel. : 01334-240008, 246737, 248888 Fax : 01334-244805, 240664 E-mail : divyayoga@rediffmail.com, info@divyayoga.com Web : www.divyayoga.com

सतपाल महाराज
मंत्री
SATPAL MAHARAJ
Minister

उत्तराखण्ड सरकार

पर्यटन, सिंचाई, लघु सिंचाई, संस्कृति, जलागम प्रबंधन,
तीर्थाटन एवं धार्मिक मेले, बाढ़ नियंत्रण,
भारत-नेपाल उत्तराखण्ड नदी परियोजनायें
उत्तराखण्ड सरकार
Tourism, Irrigation, Minor Irrigation, Culture,
Watershed Management, Pilgrimage and Religious Fairs,
Flood Control, India-Nepal-Uttarakhand River Projects
Goverment of Uttarakhand

पत्रांक-3779 /मंत्री/29-संदेश/2020-21
दिनांक- 13 दिसम्बर, 2020

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज के श्री सिद्धदाता आश्रम फरीदाबाद द्वारा संचालित जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी सुदर्शनलोक स्मारिका वर्ष 2021 का प्रकाशन करने जा रहा है जिसमें संस्था की वर्ष भर की गतिविधियों के साथ-साथ अनेक विद्वानों एवं धर्मगुरुओं के समाजोपयोगी लेखों का भी संग्रह किया जाएगा। यह प्रसन्नता की बात है कि जहां आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया जा रहा है वहीं संस्कृत और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए एक महाविद्यालय भी संचालित किया जा रहा है जिसमें छात्रों को निःशुल्क आवासीय शिक्षा दी जाती है।

आश्रम द्वारा चलने वाली पर्यावरण तथा जन-कल्याण की अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियां जैसे वृक्षारोपण, वस्त्र वितरण, स्वास्थ्य सुविधाएं आदि जनहित कार्यों को किया जा रहा है। ऐसे कार्यों से देश को एक नई दिशा मिलेगी ऐसा मेरा विश्वास है। मेरा मानना है कि यदि अन्य संस्थाएं भी इस प्रकार की गतिविधियों को बढ़ावा दें तो समाज से अनेक बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है।

इस अवसर पर मैं आपकी संस्था श्री सिद्धदाता आश्रम के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए संस्था द्वारा प्रकाशित होने वाली वार्षिकी सुदर्शनालोक स्मारिका वर्ष 2021 के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूँ।

भवनिष्ठ

(सतपाल महाराज)

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

कार्यालय - विधान सभा भवन, देहरादून दूरभाष : (0135) 2666377 फैक्स : (0135) 2666380 आवास - 17, सुभाष रोड, देहरादून , दूरभाष : 9810990009
ई-मेल : writeto@satpalmaharaj.in वेबसाइट : www.satpalmaharaj.in

॥ गायत्री विजयतेतराम् ॥ सम्पर्क सूत्र : 9463600003

श्री पंच अग्नि अखाड़ा

(अधिनियम 21 सन् 1860 अंतर्गत पंजीकृत संख्या 1166/65-66)

श्री श्री 108 तपोनिष्ठ अग्निहोत्री
श्री महन्त सम्पूर्णानन्द ब्रह्मचारी
सचिव

मुख्य केन्द्र -
11/30 सी, नया महादेव, राजघाट,
वाराणसी - 221001 (उत्तर प्रदेश)

क्रमांक.....

दिनांक.....

जानकर अति प्रसन्नता हुई कि फरीदाबाद में जनहित सेवा चैरिटबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी **'सुदर्शनालोक-2021'** का प्रकाशन करने जा रहा है। जिसमें संस्था की गतिविधियों सहित समाज उपयोगी लेखों का भी संग्रह होता है। श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के कुशल नेतृत्व में आश्रम द्वारा चलाई जा रही विभिन्न धार्मिक,सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के बारे में जानकर अभिभूत हूं और इनके निरंतर प्रगति की कामना करता हूं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया जाता है वहीं संस्कृत और संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए एक महाविद्यालय भी चलाया जा रहा है जिसमें बच्चों को शास्त्री तक निःशुल्क शिक्षा के साथ आवासीय सुविधाएं भी दी जाती हैं। आश्रम द्वारा संचालित पर्यावरण, समाज कल्याण की अन्य गतिविधियों में वृक्षारोपण, वस्त्र वितरण, स्वास्थ्य सुविधाएं आदि भी असमर्थजनों को सहर्ष प्रदान की जाती हैं।

संस्था निसंदेह प्रशंसा की पात्र है।

मैं समझता हूं कि धार्मिक संस्थाएं यदि इस प्रकार की गतिविधियों को बढ़ावा दें तो समाज से अनेक बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है।

मैं संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति और सुंदर एवं जन उपयोगी वार्षिकी **सुदर्शनालोक-2021** के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता हूँ।

धन्यवाद।

भवदीय
श्री श्री 108 तपोनिष्ठ अग्निहोत्री
श्री महन्त सम्पूर्णानन्द ब्रह्मचारी
सचिव :
श्री पंच अग्नि अखाड़ा

॥ 卐 ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ 卐 ॥
॥ 卐 ॥ जय श्री राधा–गोविन्द देवो विजयतेतराम् ॥ 卐 ॥

ठिकाना मन्दिर श्री गोविन्द देव जी महाराज

विराजमान – जयनिवास बाग, जयपुर–302 002

पंजीयन : क्र. सं. 346
दिनांक : 20.9.1972

अंजन कुमार गोस्वामी
महंत एवं एकल प्रन्यासी

दूरभाष : 0141–2619413 (मंदिर कार्यालय)
website : www.govinddevji.net
E-mail : mandir@govinddevji.net

दिनांक ..../............/............ई.
वि. सम्वत् वर्ष 20............
बं. स. व. 14 ....

डि.रजि.पत्र क्र. सं. ....

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे॥

ठाकुर श्री गोविंददेवजीऊ के प्रागट्य कर्ता श्रीमन् रूप गोस्वामी पाद्

श्रीमन्माध्वगौड़ेश्वराचार्य गोलोकधाम वासी गोस्वामीपाद् प्रद्युम्न कुमार देव जीऊ

श्री अंजन कुमार गोस्वामी
महंत एवं एकल प्रन्यासी
जयपुर एवं कॉमा(राज.),
वृन्दावन एवं मथुरा(उ.प्र.)

गोविंद चरणानुरागी मान्यवर,

पुण्यसमं मित्रं नास्ति, शास्त्र समो गुरुः यह सूत्र जब स्वयं के जीवन में उतर जाता है तो व्यक्ति से समष्टि पर्यन्त उत्कृष्ट सामाजिक मूल्यों की गंगा स्वतः स्फूर्त हो परिवार, समाज और स्वदेश से होते हुए वसुधैव - कुटुम्बकम् का पावन संदेश बन जाती है।

धर्मो रक्षति रक्षितः सार्थक हो **सर्वजन सुखाय – सर्वजन हिताय** को मूर्त रूप प्रदान कर प्रकृति एवं संस्कृति दोनों को ही समृद्ध, सुपुनीत और यशस्वी बनाते हैं।

कामना करता हूँ कि प्रभु गोविंद 'सुदर्शनालोक स्मारिका वर्ष 2021' को सामाजिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन के अपने लक्ष्यों एवं प्रयोजन में सफलता प्रदान करें और **''दिवसेनैव तत्कुर्याद् येन रात्रौ सुखं वसेत्''** का सूत्र अपने दैनिक जीवन में कर्तृव्य रूप में गौ, गोपाल और गोवर्धन की इस धरती से समग्र विश्व को प्राप्त हो।

शुभाकांक्षी

अंजन कुमार गोस्वामी
महंत एवं एकल प्रन्यासी,
ठिकाना मंदिर श्री गोविंददेवजी महाराज, जयपुर

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

रक्षा मंत्री
भारत
DEFENCE MINISTER
INDIA

Date : 20-12-2019

Message

I am happy to know that Janhit Sewa Charitable Trust (Haryana) Is bringing out its next annual Issue of **"Sudarshanalok-Samarika Varsh 2021"** in which will be Included of views & articles from renowned academicians, social workers and religious Gurus.

I congratulate all the members who are associated with this 'Janhit Sewa Charitable Trust' and wish for souvenir's successful publication.

With good wishes,

(Rajnath Singh)

Office : Room No. 104, Ministry of Defence, South Block, New Delhi-110011
Tel. : +91 11 23012286, +91 11 23019030, Fax : +91 11 23015403
E-mail : rmo@mod.nic.in

नितिन गडकरी
NITIN GADKARI

मंत्री
सड़क परिवहन एवं राजमार्ग;
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम
भारत सरकार
Minister
Road Transport and Highways;
Micro, Small and Medium Enterprises
Government of India

Message

It gives me a great pleasure to know that the Janhit Sewa Charitable Trust is bringing out the next annual issue of **"Sudarshanalok Smarika Varsh 2021".**

The Janhit Sewa Charitable Trust has been relentlessly working to provide socio-academic literature in the larger interest of the human mankind and to ensure harmony in the world. **'Sudarshanalok Smarika 2021'** will be another feather in its cap and this with new endeveour the trust will continue its age old tradition of service to the mankind.

On this occasion, I congratulate all the members of the Janhit Sewa Charitable Trust and the members of the editorial board of the Smarika. I also extend my best wishes for the success in future endeavors.

(Nitin Gadkari)

Date: 16th December, 2020
Place: New Delhi

Room No. 501, Transport Bhawan, 1, Sansad Marg, New Delhi – 110 001, Tel.: (RTH) 011-23710121, 23711252 (O), 23719023 (F),
Room No. 168, Udyog Bhawan, Rafi Marg, New Delhi – 110 011, Tel.: (MSME) 011-23061566, 23061739 (O), 23063141 (F),
E-mail: nitin.gadkari@nic.in; website-www.morth.nic.in / https://msme.gov.in

राज्यपाल हरियाणा
GOVERNOR HARYANA

हरियाणा राज भवन,
चण्डीगढ़ - 160019
HARYANA RAJ BHAVAN,
CHANDIGARH - 160019

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद **सुदर्शनालोक-स्मारिका** वर्ष-2021 नामक पुस्तिका का प्रकाशन कर रहा है।

जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट मानव कल्याण के लिए कार्य कर रहा है। स्मारिका के माध्यम से सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक व साहित्य प्रदान करना ट्रस्ट का एक राहनीय प्रयास है। इससे विश्व में सामाजिक सद्भाव स्थापित होगा। इस प्रकाशन में धार्मिक गुरुओं, सुप्रसिद्ध शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के विचार और लेख शामिल होने से आमजन को लाभ होगा।

स्मारिका के प्रकाशन से सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी, जिससे राष्ट्र और समाज में एकता व भाईचारे का संदेश जाएगा। आशा है कि यह स्मारिका समाज में और अधिक शान्ति सद्भाव व भाईचारा बढ़ाने में सार्थक सिद्ध होगी।

मैं जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद को स्मारिका प्रकाशित करने पर बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ और ट्रस्ट के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

(सत्यदेव नारायण आर्य)

EPABX 0172 -2740581, 2740583 Fax - 0172 - 2740557 E-mail : governor@hry.nic.in

कलराज मिश्र
राज्यपाल, राजस्थान

Kalraj Mishra
Governor, Rajasthan

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि फरीदाबाद में जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी '**सुदर्शनालोक-2021**' का प्रकाशन करने जा रहा है।

श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा लोक कल्याण के लिये कार्यों के बारे में जानकर अंतर्मन में आनंद की अनुभूति हुई है। हमारे यहां तो सेवा को ही परम धर्म माना गया है। ब्रह्मलीन स्वामी सुदर्शनाचार्य जी ने आदर्श जीवन जीने का जो आलोक अपने संदेशों में दिया, उसे आत्मसात करके ही जीवन धन्य हो सकता है। मैं यह मानता हूँ कि स्वामी जी ने मानवता के मार्ग पर चलने की जो दिव्य सीख हमें दी, उसमें प्राणी मात्र के कल्याण के भाव निहित हैं।

सुदर्शनालोक स्मारिका के जरिए स्वामीजी के बताये आलोक से जन-जन को लाभ होगा, ऐसा विश्वास है। स्मारिका में संस्थान की गतिविधियां, अनेक विषयों कि सुरूचिपूर्ण सामग्री पाठकों के लिये उपादेयी हैं। उन्हें इससे प्रेरणा मिले, ऐसी कामना है।

ब्रह्मलीन स्वामी सुदर्शनाचार्य जी की स्मृतियों को नमन करते हुये मैं स्वामी पुरूषोत्तमाचार्य जी के सत्संकल्प का अभिनन्दन करता हूँ। प्रकाश्य स्मारिका के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

कलराज मिश्र

(कलराज मिश्र)

राज भवन, सिविल लाइन्स, जयपुर-302006
Raj Bhawan, Civil Lines, Jaipur-302006
दूरभाष : 0141-2228716-19, 2228611-12, 2228722

मनोहर लाल
MANOHAR LAL

मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।
CHIEF MINISTER, HARYANA,
CHANDIGARH.

Dated 27-10-2020

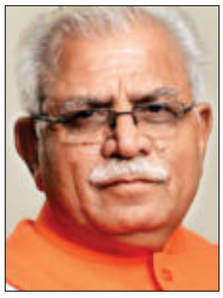

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद अपनी वार्षिक पत्रिका का नया अंक **'सुदर्शनालोक-स्मारिका वर्ष 2021'** का प्रकाशन कर रहा है।

जनहित सेवा चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा लोगों, विशेषकर युवा पीढ़ी को धार्मिक परम्पराओं, लोक मान्यताओं और संस्कृति से जोड़ने के लिये किए जा रहे प्रायास सराहनीय हैं। आशा है कि पत्रिका **'सुदर्शनालोक-स्मारिका वर्ष 2021'** में प्रकाशित आलेख ट्रस्ट अपनी धार्मिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक गतिविधियों को भविष्य में भी ऐसे ही जारी रखेगा।

मैं **'सुदर्शनालोक-स्मारिका वर्ष 2021'** के सफल प्रकाशन के लिये अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(मनोहर लाल)

Office : 4th Floor, Haryana Civil Secretariat, Chandigarh - 160001, Ph. 0172-2749396, 0172-2740995 (Fax)
Resi. : H.No. 1, Sector-3, Chandigarh - 160001, Ph. 0172-2749394, 0172-2740596 (Fax)
email : cmharyana@nic.in

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
राजस्थान

मुम.// सन्देश / औएसडीएफ / 2020
जयपुर, 10 दिसम्बर, 2020

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि जनहित सेवा चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम, फरीदाबाद की **'सुदर्शनालोक' स्मारिका वर्ष-2021** के वार्षिक अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हमारे अध्यात्म-दर्शन के मूल्यों को व्यापक बनाने में इस प्रकार के प्रकाशन अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। इससे आध्यात्मिक आस्था के साथ आपसी प्रेम, शांति और सद्भाव बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त होता है।

आशा है स्मारिका में देश की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं दार्शनिक विशेषता की जानकारी कराने वाली सामग्री का समावेश किया जा सकेगा।

मैं श्री लक्ष्मीनारायण प्रभु को श्रद्धापूर्वक स्मरण एवं नमन करते हुए **'सुदर्शनालोक'** स्मारिका के प्रकाशन की सफलता के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

अशोक गहलोत

थावरचन्द गेहलोत
THAAWARCHAND GEHLOT
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF
SOCIAL JUSTICE AND EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

कार्यालय : 202, सी विंग, शास्त्री भवन,
नई दिल्ली–110115
Office : 202, 'C' Wing, Shastri Bhawan,
New Delhi-110115
Tel. : 011-23381001, 23381390, Fax : 011-23381902
E-mail : min-sje@nic.in
दूरभाष : 011-23381001, 23381390, फैक्स : 011-23381902
ई-मेल : min-sje@nic.in

Message

I am happy to know that Janhit Sewa Charitable Trust is bringing out the next annual issue of **SUDARSHANALOK-Smarika Varsh 2021.**

I have been informed that **SUDARSHANALOK — Smarika** is aimed to provide socio-academic religious literature in the large interest of the human mankind and to ensure harmony in the world as this publication will consist of views and articles from renowned academicians, philanthropist, social workers and religious Gurus.

I wish Janhit Sewa Charitable Trust all the best for their future endeavours and hope that they will continue to do their good work in the service of people at large.

11·12·20

Dr. Thaawarchand Gehlot

कृष्ण पाल गुर्जर
KRISHAN PAL GURJAR

सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
SOCIAL JUSTICE & EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

शुभकामना संदेश

जानकर अति प्रसन्नता हुई कि फरीदाबाद में जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी सुदर्शनालोक 2021 का प्रकाशन करने जा रहा है जिसमें संस्था की गतिविधियों सहित समाज उपयोगी लेखों का भी संग्रह होता है। इनके निरंतर प्रगति की कामना करता हूँ। आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया जाता है वहीं संस्कृत और संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए एक महाविद्यालय भी चलाया जा रहा है जिसमें बच्चों को शास्त्री तक निःशुल्क आवासीय शिक्षा भी दी जाती है।

मैं आपकी संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति और सुंदर एवं जन उपयोगी वार्षिकी **सुदर्शनालोक -2021** के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

धन्यवाद।

(कृष्णपाल गुर्जर)

Office : 301, 'A' Wing, Shastri Bhawan, Dr Rajender Prasad Road, New Delhi-110001, Tel. : 011-23072192, 23072193, Fax : 011-23072194

कैलाश चौधरी
KAILASH CHOUDHARY

कृषि एवं किसान कल्याण
राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR AGRICULTURE
& FARMERS WELFARE
GOVERNMENT OF INDIA

Message

I am happy to know that Janhit Sewa Charitable Trust is bringing out the next annual issue of **SUDARSHANALOK-Smarika Varsh 2021.**

I have been informed that **SUDARSHANALOK**- Smarika is aimed to provide socio-academic religious literature in the large interest of the human mankind and to ensure harmony in the world as this publication will consist of views and articles from renowned academicians, philanthropist, social workers and religious Gurus.

I wish Janhit Sewa Charitable Trust all the best for their future endeavours and hope that they will continue to do their good work in the service of people at large.

(Kailash Choudhary)

Office : 199Q, Krishi Bhawan, New Delhi-110 001. Tel. : +91-11-23782343, 23388165 Fax : 23074190

भूपेन्द्र सिंह हुड्डा,
एम.एल.ए.
नेता प्रतिपक्ष,
नेता कांग्रेस विधायक दल,
हरियाणा विधान सभा
एवं पूर्व मुख्य मन्त्री, हरियाणा

BHUPINDER SINGH HOODA,
M.L.A.
Leader of Opposition,
Leader of Congress Legislature Party,
Haryana Vidhan Sabha
and Former Chief Minister, Haryana.

D.O. No. Secy./Ex-CMH/2020/507

Kothi No. : 70, Sector-7,
Chandigarh.
Ph. : 0172-2794473

Dated 14-12-2020

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि जनहित सेवा चेरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका '**सुदर्शनालोक**' के अंक स्मारिका वर्ष 2021 का प्रकाशन किया जा रहा है।

स्मारिका का मुख्य उद्देश्य सामाजिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक क्षेत्र में मानवता के कल्याण तथा संसार में शान्ति व भाईचारा बढ़ाने के लिये लोगों को साहित्य सामग्री प्रदान करना है।

मुझे आशा है कि ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पत्रिका '**सुदर्शनालोक**' में समायोजित महान शिक्षाविदों, समाज सेवकों व धार्मिक गुरूओं के विचार एवं लेख पाठकों को समाज सेवा के लिए प्रेरित करेंगे।

मैं, शुभकामनाएँ भेजते हुए स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(भूपेन्द्र सिंह हुड्डा)

Delhi : # 191, North Avenue, New Delhi - 11001, Ph.: +91-11-23093805.
Rohtak : Model Town, Delhi Road, Rohtak (Haryana) - 124001, Ph.: +91-1262-282283.
Chandigarh : Kothi No. 70, Sector-7, Chanidgarh - Ph.: 0172-2794473

सत्यमेव जयते

वसुन्धरा राजे

13, सिविल लाइन्स
जयपुर (राज.)

सन्देश

संदेश

बड़े ही हर्ष का विषय है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा वार्षिक संस्करण **'सुदर्शनालोक - स्मारिका वर्ष 2021'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस स्मारिका का उद्देश्य मानव जाति को सामाजिक, शैक्षणिक तथा धार्मिक साहित्य उपलब्ध कराने के साथ सम्पूर्ण विश्व में सद्भाव सुनिश्चित करना है।

मुझे यह भी बताया गया है कि इस स्मारिका में प्रसिद्ध शिक्षाविद्, जनहितैषी, सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा धर्म गुरूओं के विचार और लेख भी प्रकाशित किए जाएंगे।

स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

वसुन्धरा राजे

(वसुंधरा राजे)

सत्यमेव जयते
Smt. Maneka Sanjay Gandhi
MEMBER OF PARLIAMENT
(Lok Sabha)

Message

Respected Swami Ji,

I am happy to note that the Janhit Sewa Charitable Trust is bringing out its annual issue of SUDARSHANALOK. Janhit Sewa Charitable Trust is engaged in religious and philanthropic activities and is making valuable contribution to the society.

I am particularly happy to note that the Trust also runs a gaushala attached to the temple complex where distressed animals are being looked after. I urge you to expand the strength of gaushala.

I am enclosing a copy of my book on professional management of gaushalas which will be useful for the Trust.

Warm Regards,

Maneka Sanjay Gandhi

(Smt. Maneka Sanjay Gandhi)

14, ASHOKA ROAD, NEW DELHI-110001, PH. : 011-23357088, FAX : 011-23354321

OSCAR FERNANDES, MP

सत्यमेव जयते

Resi. : 8 Pt. Pant Marg
New Delhi-110 001
Tel. No. : 23359177
23359178
(O) : 23015947

Message

I want to wish my heartiest best wishes for the **SudarshanaLok Smarika Varsh-2021** published by Janhit Sewa Charitable Trust. This Smarika aims to improve social values and establish peace and harmony in the world.

My all good wishes are with the Ashram & Smarika publications.

(Oscar Fernandes)

oscar@sansad.nic.in, oscaraicc@gmail.com

DR. KARAN SINGH

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं आदित्यवर्णम्

3, NYAYA MARG,
CHANAKYAPURI
NEW DELHI - 110 021

Message

I am glad to know that the Janhit Sewa Charitable Trust is bringing out its annual issue of **Sudarshanalok in 2021**. The Trust has been engaged in various social activities for the welfare of society. In this hour of crisis we need to reformulate our programmes so as to give maximum benefit to people during the Corona pandemic.

I send my good wishes to the office bearers and members of the Trust.

Karan Singh

(Karan Singh)
Oct. 26, 2020

TEL. (011) 2611-5291 2611-1744, FAX (91-11) 2687-3171 2462-7102
Email karansingh@karansingh.com

Sri:
Srimate Ramanujaya Nama:

Mahāmahōpādhyāya, Śāstravidyānidhi, Pandita-raja
M.A. Lakshmithathachar
Recipient of Award of President of India President,
Samskriti Foundation, Mysore
Presiding Acharya, Anantarya Peetham,
Melkote, Mandya District, Karnataka

SHUB KAMNA SANDESH

Salutations to Sri Sri Purushottamacharyaji Maharaj, Head Sidhdata ashram, Faridabad, Haryana!

I am very happy to offer the "**Shubkamna Sandesh" for Sudarshanalok – 2021**.

Sri Sidhdata Ashram, founded by HH Sri SriSudarshanacharyaji Maharaj is a unique and prestigious organization that is dedicated to spread the great preachings of Srivaishnavism in this Universe with the vision that is beneficial to the entire humankind.

Presently, it is headed by ŚrīŚrīPurushottamacharyaji Maharaj who is a great spiritual leader, wonderful scholar and also compassionate Guru interested in the benefit and welfare of all devotees of the Supreme Lord Narayana irrespective of their nationality, race, caste, creed or sex. He is following in the footsteps of his revered father and Acharya in spreading the Universal religion of Srivaishnavism that was envisioned by the Great Acharya Ramanuja. The social services that are being rendered by Puja Swamiji to all people from around the world is commendable and worth emulating and I pray to the Lord Narayana as well as the Acharya-s adorning our divine Guru-parampara to shower their Divine Grace on PujyaSwamiji and facilitate the continuation of the divine services he is rendering to society at large for several more decades.

Prof. M.A.Lakshmithathachar

राष्ट्रपति-सम्मानित
देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी
एवं निदेशक, संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार)
अध्यक्ष, आधुनिक संस्कृत पीठ, ज.रा. राजस्थान, संस्कृत विश्वविद्यालय
प्रधान सम्पादक "भारती" संस्कृत मासिक
सदस्य, संस्कृत आयोग, भारत सरकार

मो: +91-8764044066
फोन: (0141)2376008
अध्यक्ष, मंजुनाथ स्मृति संस्थान
सी-8, पृथ्वीराज रोड
जयपुर-302001

शुभाशंसा

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि देश का सुप्रतिष्ठित धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थान श्री सिद्धदाता आश्रम अपनी सुदीर्घ पावन परम्परा के अनुरूप **सुदर्शनालोक-2021** का प्रकाशन कर रहा है। आश्रम वैष्णव सेवा का दिव्यधाम तो है ही, यहां समाज हित के, देशहित के, शिक्षा के, गौसेवा के तथा जनहित के अनेक कार्य भी हो रहे हैं। सुदर्शनालोक से सांस्कृतिक प्रकाश भी फैलता है तथा आश्रम द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी भी व्यापक रूप से प्रसारित होती है। अनेक वर्षों से सुदर्शनालोक के दिव्य आलोक से हमारा समाज आलोकित हो रहा है। यह परम संतोष एवं गौरव का विषय है। **सुदर्शनालोक -2021** के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मेरी हार्दिक शुभाशंसा सहर्ष प्रेषित है।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(देवर्षि कलानाथ शास्त्री)
विजयदशमी, सं. 2077, 25/10/2020

आत्मा के लिए औषधि है भगवान का नाम

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक- श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम), फरीदाबाद, हरियाणा

आत्मा को प्रसन्न करने हेतु उसके प्रति परमात्मा के नाम की आवश्यकता है, वह अन्य साधनों से प्रमुदित नहीं हो सकती। ध्यान में वह पति को स्वप्न में देख लेती है, किन्तु मिठाइयां कब वितरित करती है? बताइये! जब सरकारी पत्र आ जायेगा, मिठाइयां वितरित करना आरम्भ कर देती है। वह प्रसन्न हो कमलिनी की तरह विकसित हो जाती है। खुशी में नये वस्त्र धारण करती है और ना-ना श्रृंगार से अपने-आपको सजाने लगती है। इसी तरह आत्मा है, उसका पति परमात्मा है। हम परमात्मा से विमुख होकर अनेक प्रकार के दुःख पाते जा रहे हैं। यह मैं आप सभी को सदैव स्मरण दिलाता रहता हूं।

हमें मानव जीवन प्राप्त हुआ है। हर मानव का धर्म मानवता है। मानवता का एक लक्ष्य निर्धारित होना चाहिए। यदि लक्ष्य भ्रष्ट है अथवा निर्धारित नहीं है, हमारा मानव जीवन ही निरर्थक है। लक्ष्य सुनिश्चित होगा, हम बहुत कुछ प्राप्त कर सकेंगे और यदि लक्ष्यविहीन हैं तो हमें इस जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं होगा- यह सुनिश्चित और सुविदित है।

यदि जीवन में भौतिकवाद को ही अपना लक्ष्य बना लिया है, वह अस्थिर और क्षणभंगुर है, सुख-सुविधाएं और वासनाएं विनाशी और अस्तित्वहीन हैं। न आज तक स्थायी हो सकी और न हो सकेंगी। ऐसा लक्ष्य जीवन को भ्रान्त कर मूल उद्देश्य मानव जन्म को ही विनिष्ट कर देता है, क्योंकि 'यो जायते सो म्रियते।' जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु भी अवश्यम्भावी है। आम आदमी तक मरण का पर्व देखता है, फिर चाहे वह राजा हो या रंक हो, धनवान् हो या निर्धन, शक्ति मान हो या निःसक्त जन।

मृत्यु सभी के लिए अनिवार्य है। कोई भी इसे रोक नहीं पाता है और न कोई मुट्ठी में बांध पाता है। आप स्मरण कीजिये कि आपको यह मानव-जीवन क्यों मिला था? आपको किस धर्म की पालना के लिये भेजा गया था? आपको क्या लक्ष्य दिया गया था? आप भौतिकवाद के भ्रम में फंसकर अपना मूल उद्देश्य ही भूल गये, अपने संकल्प से ही भटक गये। यदि हम भौतिकवाद का लक्ष्य बनायेंगे तो जिस लक्ष्य के लिए यह मानव शरीर हमें मिला है, हम उसे प्राप्त नहीं कर पायेंगे। बाबा नानक कहते हैं-

एक भगति भगवान, जिह प्राणी के नाही मन।
जैसे सूकर स्वान, नानक मान ताहि तन।। (नानकदेव)

अर्थात् यह मानव देह अधिक पवित्र है। जब वह उस भगवान के स्मरण और भक्ति से दूर हो जाता है, जब नाम से दूर हो जाता है तो उसकी गति पशुओं की तरह ही होती है। हमें अपने जीवन का परम लक्ष्य बनाना चाहिए और इसकी पूर्ति के लिए छोटे लक्ष्य बनाकर, कार्य करने चाहिए, इसमें कोई हर्ज नहीं है। वस्तुतः वे छोटे लक्ष्य परमात्मा का सान्निध्य नहीं दिला सकते। प्रभु के सान्निध्य और मुक्ति के लिए परम लक्ष्य की आवश्यकता है, किन्तु ये छोटे लक्ष्य भी साधना की ओर प्रेरित करते हैं, ये सेतु का काम करते हैं, जिनके माध्यम से परम लक्ष्य का निर्धारण सम्भव है। उदाहरणार्थ- जैसे हमने लक्ष्य बनाया कि हमें हापुड़ के बेकार बच्चों को काम देना है। उसके लिए हम एक बहुत बड़ा कारखाना लगाने की योजना बनाते हैं। इस कारखाने के लिए भूमि की आवश्यकता है। उसके पश्चात् भवन, शेड, मशीनरी, लोहा, सीमेन्ट, मशीनें, कारीगर आदि सभी की व्यवस्था करनी होगी। यदि इच्छा ने संकल्प का रूप धारण कर लिया है, क्रियान्वित भी होगी। यह सब दृढ़ लक्ष्य पर निर्धारित है। सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं की व्यवस्था भी करनी होगी। प्रशिक्षित अधिकारी, सक्षम कर्मचारी, डिस्पेन्सरी, भोजनशाला, जल की टंकी, सुरक्षा कर्मचारी आदि आदि। छोटे लक्ष्य हों, किन्तु वस्तुतः ये परम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साधन हैं। बिल्डिंग, मशीनरी आदि लक्ष्य नहीं हैं, केवल साधन हैं। शरीर, भौतिक पदार्थ, भौतिक परिस्थिति साधन हैं, पर लक्ष्य नहीं हैं। इन छोटे लक्ष्यों से परमार्थ होगा और वही परम लक्ष्य की भूमि बनकर आपके लिए मार्ग प्रशस्त करेगा और एक क्षण ऐसा आयेगा कि आप परम लक्ष्य की साधना के साधक सिद्ध होंगे, इसमें किंचित भी संदेह नहीं है।

मानव का लक्ष्य भौतिकवाद की चकाचौंध, माया-मोह का भय नहीं है, वह इस संसार में अनेक योनियों में भटकता हुआ मानव-योनि में नहीं आना चाहता, वह तो मुक्ति की कामना करता है। कर्म-बंधन से मुक्त होकर मोक्ष का लक्ष्य बनाना चाहता है। वस्तुतः उसके मानव जीवन का लक्ष्य ही मोक्ष है। भौतिकवाद का उपयोग दोनों ही तरह से होता है, सद् और असद्। सदुपयोग

परहित की कामना से होता है और असद् का दुरूपयोग स्वयं के लिए होता है। धन-अर्जित करने के पश्चात् तृष्णा के मरूस्थल में दौड़ता रहता है, मिथ्या-प्रदर्शन की होड़ में विलासिता के समान एकत्र कर वासना के कुंड में गिरा रह जाता है। अपने लक्ष्य को विस्तृत कर परम-प्रभु का नाम भी नहीं लेना चाहता है। वह पूर्णतः लक्ष्य भ्रष्ट हो गया और पाप कर्मों का अत्यधिक संचय कर लिया। उसे मुक्ति मिलना बहुत कठिन है। आज भी योनि में संत्रस, कुण्ठा, दुःख, पीड़ा आदि को आमन्त्रण दे दिया। उसके चारों ओर यातनाओं के ठहराव से अधिक कुछ भी नहीं है।

भौतिकवाद का दुरूपयोग किया जा सकता है, क्षणभंगुर मिथ्या सुख की अनुभूति हो सकती है, किन्तु उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता है जो स्वयं ही परिवर्तनशील है, नश्वर है, नाशवान् है, उसे अनुभव कर क्या सुख अथवा लाभ प्राप्त हो सकेगा? यह जीव का क्या आश्रय बन सकता है, उसका क्या सहयोग कर सकता है? जीव का लक्ष्य केवल अविनाशी की प्राप्ति है। नाशवान् का लक्ष्य केवल बचपना है। नाशवान् का आश्रय लेना निरी मूर्खता है।

अतः माया-मोह, ममता के लिए भौतिकवाद का अनुयायी होना अपने ही जीवन के लिए विश्वासघात है। यह बात कोई दूसरा नहीं करता, अपनी भौतिकी लालसा ही वंचना करती है और अन्त में पश्चाताप की अग्नि में जलने के सिवा कुछ भी प्राप्त नहीं होता है।

हमारा अभिमत है कि केवल योग के माध्यम से ईश्वर के दर्शन नहीं हो सकते हैं। कठोर साधना के माध्यम से उसे देख सकते हैं किन्तु प्राप्त नहीं कर सकते। प्रभु के नाम द्वारा आत्मा और परमात्मा के मिलाने का नाम ही योग है। योग का सरल सा अर्थ है जोड़। योग के मूल स्वरूप को खोकर केवल मन, बुद्धि और शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से यह जोड़ सम्भव नहीं है। नेत्र बंदकर ध्यान लगाना योग नहीं कहा जा सकता, नाक पकड़ने का नाम योग नहीं है। शारीरिक व्यायाम करना योग नहीं है। इस युग में अनेक लोग यौगिक के नाम पर विविध् क्रियाएं करना सिखाते हैं, किन्तु सब आत्मा को परमात्मा के साथ नहीं जोड़ सकती हैं। ऐसा करना केवल भूल है, अपना समय नष्ट करना है। अपने जीवन का सर्वनाश करना है। नेत्र बंद कर, नाक से श्वांस रोकना, एक पैर पर खड़े होना आदि से ईश्वर की प्राप्ति कदापि सम्भव नहीं है। यदि आपको प्रभु से साक्षात्कार करना है, आवागमन से मुक्ति पाना है, मोक्ष लक्ष्य है, यह समझिये कि वह परमात्मा नाम में बसता है। वह नामवाला है, वह साकार है और नाम से सब जगह उसका वास करता है। प्रभु का नाम लेना, स्मरण करना, सत्संग करना ही साधना का सहज साधन है। यह मत भूलिये कि नाम में ईश्वर का अस्तित्व है, वास है, अतः नाम संकीर्तन करना उचित है। हमारे शास्त्रों में, वेदों में, उपनिषदों में, पुराणों में, आदि काव्यों में, स्मृतियों में उस परम ब्रह्म को साकार रूप में ही ग्रहण किया गया है, साकार की ही प्रार्थना की गई। श्रीकृष्ण की प्रार्थना में प्रमाण आता है-

वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्
पीताम्बरादरूणबिम्बफलाधरोष्ठात्।
पुर्णेन्दुसुन्दरमुखारविन्दनेत्रास्तत्
कृष्णात् परं किमपि तत्वमहं न जाने।।
(स्तोत्र रत्नावली)
नीलाम्बुजश्यामलकोमलागंम्
सीतासमारोपितवामभागम।
पार्णा महासायकचारूचापम्,
नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।
(मानस आयोध्याकांड)
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं, कमलनयनं योगिभिर्ध्यानागम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।
(स्तोत्र रत्नावली)

मेरे प्रेमियों, इस युग में धर्म के नाम पर आडम्बर का व्यापक प्रदर्शन हो रहा है। अनेक आश्रमों के नाम पर आधुनिक चिन्तन केन्द्रों की स्थापना हो रही है। भारतीय संस्कृति के आवरण में पाश्चात्य सभ्यता का नृत्य हो रहा है। भौतिकी जीवन का प्रतिपादन किया जा रहा है। भीड़ को एकत्र कर उन्हें क्या दिया जा रहा है? किन्तु यह स्पष्ट है कि उन्हें सत्य और लक्ष्य से अपरिचित रखा जा रहा है। एक भीड़ इन केन्द्रों में भटक रही है। आदर्श की ओट में यथार्थवाद का स्वरूप समझाया जा रहा है, आध्यात्मिकता के नाम पर वासना समाधि को महत्व दिया जा रहा है। बहुत कम आश्रम हैं, जहां वैदिकी, पौराणिकी, औपनिषदकी चिन्तन हो रहे हों। मुझे यह सब कुछ देखकर बहुत दुख होता है, किन्तु इस जनतंत्र में भीड़तंत्र का बहुबल है। मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि न जाने आज के धर्म गुरु कहां से उन ग्रन्थों को ले आये? कब उन्होंने पढ़ लिया? किस गुरुकुल में उन्होंने अध्ययन कर लिया? कहां सुन लिया है कि वेद, पुराण, उपनिषद, श्रुति, स्मृति, दर्शन से अलग हटकर चिन्तन के मन्थन को विवश कर रहे हैं। अनेक धर्मगुरु अपना धर्म चला रहे हैं, अपना पंथ बना रहे हैं, अपनी पद्धति का निर्माण कर रहे हैं, अपने चिन्तन का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। हमारे ग्रन्थ देवभाषा संस्कृत में लिखे हुए हैं, उन्हें संस्कृत

व्याकरण का प्राथमिक ज्ञान भी नहीं है। मैं किसी की निन्दा अथवा आलोचना नहीं कर रहा हूं, अपितु यह कहना चाह रहा हूं कि हमारे सनातन धर्म के आदर्शों पर जो कुठाराघात हो रहा है, वह सहज नहीं है। आधुनिक भौतिकवाद से चिन्तन को सम्पृक्त कर जो दिशाबोध् हो रहे हैं, वे केवल भ्रान्ति हैं। मानव के ध्येय को भ्रान्त करने का षड़यन्त्र है, जिससे वैदिकी और भारतीय संस्कृति के सनातन मूल्यों और दर्शन को तोड-मरोड़कर विद्रूपता का प्रदर्शन करना आम जनता के साथ जघन्य अपराध् है। पुण्य की अपेक्षा पाप कर्म की ओर, सद् की अपेक्षा असद् की ओर, ज्ञान से अज्ञान की ओर, प्रकाश से अन्धकार की ओर धकेला जा रहा है। यह सब कुछ स्वार्थी तत्वों का आन्दोलन है।

हो सकता है कि यह रावण धर्म हो, राक्षसी धर्म हो, या चार्वाक का दर्शन हो। जिसमें वेद का सम्पुट नहीं है, जहां धर्म का अनुमोदन ही नहीं है, जहां रामायण का पुट नहीं है, जहां श्रीमद् भागवत् का चिन्तन नहीं है, जहां उपनिषदों का दर्शन नहीं है, जहां हमारे धर्म एवं दर्शन ग्रन्थों के सूत्रों का प्रतिपादन नहीं है, वह धर्म भले ही हो, उसे राक्षसी धर्म कहना ही उचित होगा। राक्षसी धर्म की ओर गमन करके मेरे प्रेमियों, हम अपनी मानवता और संस्कृति का समूल विनाश क्यों करें? मानव-जन्म के ध्येय का सही निरूपण नहीं, उसे कौन-सा धर्म कहा जाये? मैं उसका वर्गीकरण और नामकरण नहीं करना चाहूंगा।

जहां आदर्श की परिभाषा परिवर्तित कर दी गई हो, जहां नैतिक मूल्यों के सूत्र बदल दिये गये हो, जहां लक्ष्य का स्वरूप भी परिवर्तित कर दिया गया हो, जहां हमारे सद्ग्रन्थों का उपहास किया जा रहा हो, उसे धर्म नाम देना न्याय संगत नहीं होगा।

मैं आधुनिक परिवेश से परहेज नहीं करता हूं, यदि ध्येयमूलक चिन्तन है, मुझे उससे कोई द्वेष नहीं है, किन्तु तनाव और कुण्ठाग्रस्त भीड़ को वैदिक मार्ग से हटाकर, भारतीय संस्कृति से विलग कर शांति के नाम पर विकृत करने का कार्य यह समझ से बाहर की बात है। मैं ऐसे मार्ग का विरोधी नहीं हूं क्योंकि विरोध भी निन्दा है और मैं इस पापकर्म को नहीं करना चाहता हूं, किन्तु यह भी सत्य है कि मैं ऐसे मार्गों का पक्षपाती नहीं हूं और न ऐसे विचार या धर्म का समर्थन या अनुमोदन ही करना चाहता हूं। मैं सत्य का पक्षपाती हूं, धर्म का अनुसरण करने वाला हूं। त्याग और आदर्श के सिद्धान्तों के साथ हरि समर्पण के प्रति श्रद्धा रखता हूं, अतः मेरे प्रेमियों! हमें अपने संकल्प के साथ अपने लक्ष्य के प्रति जागृत रहना है। अपने ध्येय के लिए साधना पथ का साधन बने रहना है, मेरा दृढ़ विश्वास है कि एक क्षण आत्मा से परमात्मा का संयोग अवश्य होगा और हम सहज भाव से धर्मार्थचतुष्टय की प्राप्ति करके रहेंगे। श्रीमन् नारायण की हमारे ऊपर असीम कृपा है। आप अपने विश्वास पर दृढ़ रहिये और नाम को अपने मानस में स्थापित कर लीजिए।

भगवान् श्रीकृष्ण गीता में कह रहे हैं-

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः। (गी. 15/7)

अर्थात् जीव मेरा अंश है। लोग इस सत्य को नहीं स्वीकारना चाहते हैं। लोग आजकल प्रमाण मांगते हैं, साक्ष्य मांगते हैं, कहते हैं कि इसका प्रत्यक्ष सबूत दे। हमारे शरीर दसों अंगुलियों में चिन्ह लगे हुए हैं। ये लगाये हुए नहीं हैं, जन्मजात हैं। इन चिन्हों के शंख, चक्र एवं गदा के चिन्ह अंकित हैं। इसके पश्चात् भी यदि आप भटक रहे हैं, प्रमाण की बात कर रहे हैं, यह आपकी मर्जी। इसे हठधर्मिता की ही संज्ञा दी जायेगी। हां, हम उसी के हैं, जिसके शंख, चक्र लगे हुए हैं। आप यदि किसी और के अपने आपको मानते हैं, आपकी हठवादिता।

प्रेमियों! हम यह विचारते हैं कि जीवन की सारणी बहुत लम्बी है। युवावस्था में भोगवाद को भोगें, प्रौढ़ावस्था में दायित्वों का निर्वहन करना ही होगा। जब वृद्धावस्था आयेगी तब हरि स्मरण, हरिनाम संकीर्तन कर लेंगे। हम भगवान् के नाम का स्मरण कल कर लेंगे, परसों कर लेंगे। ऐसी शीघ्रता भी क्या है? सारे समाज में 'कर्णे-कर्णे जपनाः' वाली स्थिति पैदा हो चुकी है।

यह धर्म क्या है? जो अनादि काल से निरन्तर चलता आ रहा है। आप सभी यह कहते हैं ''सनातन धर्म की जय हो।'' सब बोलते हैं, ''सनातन धर्म की जय हो।' अन्ततः आप लोगों ने कभी विचार किया है कि वह सनातन धर्म क्या है? इसका अर्थ क्या है? इसकी परिभाषा क्या है? कहा जाता है कि ये बाबा लम्बे-लम्बे तिलक लगाकर बैठे हैं, यह देख लीजिए (अपने मस्तक की ओर संकेत करते हुए)।

आप लोग गाते हो, हर बालक गाता है, बालिकाएं गाती हैं। विद्यालय में अध्यापक और अध्यापिकाएं गाती और गवाती हैं- आओ बच्चो तुम्हें दिखायें झांकी हिन्दुस्तान की। इस मिट्टी से तिलक करो, यह मिट्टी है बलिदान की।

ऐसा बच्चों से गवाते हैं, बच्चे गाते हैं। क्या ऐसा नहीं कहते? वे केवल कहते हैं। इस सम्प्रदाय को देखिए कि यह प्रायोगिक अनुभव करा रहा है।

मैं यही बलिदान मांग रहा हूं, मैं आपको चरणारविन्दों से दूर न जाऊं, आपके चरणारविन्दों की सेवा कराता रहूं, भगवान् का स्मरण कराता रहूं, सत्संग सुनाता रहूं।

जानकारी देने का दंभ भरने वालों की कमी नहीं

अनन्तश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर
श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
पीठाधीश्वर- श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम), फरीदाबाद, हरियाणा

परमात्मा की शरण में जाने के लिए, उसकी कृपा को पाने के लिए और जीवन का सही मतलब जानकर जीवन जीने के लिए भक्त के लिए कौन सा रास्ता सही है और कौन सा रास्ता अंतिम है। इस प्रकार के सवालों के जवाब जानने के लिए भक्त को गुरू की शरण में जाना होगा, वो गुरू जो सब जानता है। वो गुरू जो परमात्मा की कृपा को केवल बताए ही नहीं बल्कि दिखा भी दे, दिला भी दे और उससे मिला भी दे।

ऐसे गुरू को पाने के बाद चिन्तकों, भक्तों, योगियों व साधकों के सामने भी आने वाले रास्ते की धुंध साफ हो जाती है। गुरू की शरण लेने वाले को किसको चुनें, कैसे चुनें, किस आधार से चुनें? चुनने का आधार क्या हों, आदि सभी प्रश्न हवा हो जाते हैं।

यह बिल्कुल सत्य है कि जीवन के पथ पर अनेक मार्ग हैं, जिनको देखने भर से भटकाव हो सकता है। जीवन में भटकाव हो सकता है। जीवन का फलसफा बदल सकता है।

जीवन पथ पर अनेक कुपथ हैं और कुमार्ग हैं। जो बार बार भटकाने का काम कर सकते हैं। लेकिन लाख टके का सवाल है कि आखिरकार इन कुमार्गों से कैसे बचें? अपने आपको इस भटकन से कैसे बचाएं? साधक के जीवन की सबसे बड़ी समस्या है कि वह सही का चुनाव कैसे करे? गलत को कैसे पहचानें? गलत अगर पहचान में आ जाए तो आते ही छूटना शुरू हो जाता है। गलत को गलत जानकर कोई कैसे उसका पालन कर सकता है? असत्य की पहचान ही असत्य की मुक्ति है, लेकिन पहचानें कैसे? क्योंकि असत्य की संख्सा गिनती से बाहर की बात है। लेकिन सत्य की पहचान भी तभी हो सकती है जब उसका अनुभव कर लिया हो। लेकिन आज के सत्य में भी भटकाव हो चुके हैं, सत्य भी अनेक हो गए हैं। सभी अपने गढ़े शब्दों को सत्य बता रहे हैं। ऐसे में यह कैसे तय किया जा सकेगा कि सत्य क्या है।

आज अनेक प्रकार के भाव-भक्ति, अनेक प्रकार की पूजा पद्धतियां तपश्चर्याएं प्रचलन में हैं, अनेक प्रकार के ग्रंथ हैं

> **“सभी के अपने आश्चर्यजनक सत्य हैं। यह भेद कर पाना मुश्किल है कि आखिर में सत्य क्या है। ऐसे भक्तों की भी कमी नहीं है जो परमात्मा के गुणगान और ज्ञान पर अपने ही हिसाब से विचार करते हैं।**

और अनेक प्रकार के वेद-पाठ करने वाले हैं। समाज में अनेक प्रकार के योग हैं, अनेक प्रकार के भक्त हैं तो अपने तरीके के भगवान की गढ़ना कर रहे हैं। ऐसे में भक्त क्या करे, उसके लिए कौन सा रास्ता सही है और कौन सा देव उसपर कृपा कर सकता है। इसकी जानकारी कौन देगा क्योंकि जानकारी देने का दंभ भरने वालों की संख्या में कोई कमी नहीं है। सभी के अपने आश्चर्यजनक सत्य हैं। यह भेद कर पाना मुश्किल है कि आखिर में सत्य क्या है। ऐसे भक्तों की भी कमी नहीं है जो परमात्मा के गुणगान और ज्ञान पर अपने ही हिसाब से विचार करते हैं।

ऐसे में साधक क्या करे? उसके लिए कौन सा मार्ग सही है और कौन सा गलत है, इसका निर्णय कौन करेगा। हमारा जीवन क्षणभंगुर है लेकिन रास्ते अनेक हैं। समयबद्ध प्रक्रिया में हम और आप सभी बंधे हुए हैं। इसलिए जो समय से पिछड़ जाएगा, उसके जीवन का सही मतलब जीरो हो जाएगा। ऐसे में यह देखना बहुत जरूरी है कि आखिरकार सत्य का मार्ग कौन सा है।

वास्तविकता यही है कि सच सच ही होता है और झूठ झूठ होता है। सच का एक रास्ता है लेकिन झूठ के दस रास्ते अपने आप बन जाते हैं। अपने आसपास देख लीजिये कोई एक आदमी सत्य को उपलब्ध होता है तो दस करोड़ लोग असत्य के मार्ग पर चलते दिखाई देते हैं। लेकिन देखने वाली बात यही होगी कि उन असत्य मार्ग पर चलने वालों ने भी अपने मार्ग बना लिए हैं, उनके भी अपने नियम हैं। जिनपर वह दूसरों को चला रहे हैं। झूठ के रास्तों पर चलने वालों के

भी अपने शास्त्र बन चुके हैं। ऐसे में सच और झूठ का निर्णय कौन करेगा।

पुराने समय में केवल वेद अकेला शास्त्र था। तब अनेकानेक धर्मों की बाढ़ भी नहीं थी। लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब तो धर्म भी छोटे छोटे कबीलों जैसे हो गए हैं। किसी ने मुझे बताया कि दुनिया में डेढ़ सौ से ज्यादा धर्म हैं और सैकड़ों प्रकार के मतों को मानने वाले मौजूद हैं। सभी अपने अपने प्रकार से परमात्मा से मिलवाने का दावा कर रहे हैं। सभी मुक्ति, मोक्ष, आनन्द और संस्कार की बात करते हैं। लेकिन इनके दावों की जांच कौन करेगा। पहले के जमाने में कुछ भी खोजना होता था तो विद्वान वेद के उदाहरण देते थे, वेदों की ऋचाओं में उदाहरण खोजते थे, एक शास्त्र था। वेद वचन सत्य था, तब संतों के पास भी बड़ी सुविधा थी। लेकिन अब तो अनंत वेद हो गए हैं, अनंत शास्त्र हो गए हैं। कौन से शास्त्र में खोजें।

अब शास्त्र से मार्ग की खोज करना आसान नहीं रह गया है। उनके आधार पर कोई भी फैसला लेने से पहले कई बार सोचना होगा लेकिन रास्ता सही मिलेगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है। एक ही ग्रंथ दो जगहों पर भिन्नता लिए हुए है। इसके बारे में कौन निर्णय लेगा।

इसकी जानकारी कौन देगा। बहुत मुश्किल है। अपने आप निर्णय करना तो जैसे असंभव ही है।

तो ऐसे में जहां साधक की अवस्था भी अज्ञान की हो तो उसकी चेतना का जागरण कौन करेगा, कैसे होगा यह सब। अगर नहीं हो सका तो गया मानव जीवन बेकार। समझो यह जिंदगी बड़ी बेवकूफी के साथ बिता दी। परमात्मा ने इसका सदुपयोग कर मुक्ति के द्वार खोलने की शक्ति दी थी, लेकिन हमने इसे पारस पत्थर की तरह आले में रख दिया ओर कोई काम नहीं लिया। ऐसे में पारस का क्या दोष भाई। दोष तो पारस का प्रयोग नहीं करने वाले मूढ़ का है। इस प्रकार अगर साधक को पारस दे भी दिया जाए तो उससे क्या फायदा। क्योंकि वह तब तक पारस का फायदा नहीं उठा सकेगा, जब तक उसे पारखी सुनार या विद्वान पारस का असली मतलब नहीं समझाएगा, पारस का प्रयोग नहीं समझाएगा और पारस के प्रयोग में होने वाली सावधनियां नहीं बताएगा।

हमारे अंदर यह परख कौन लाएगा कि हम समझ लें कि सोना क्या है, मिट्टी क्या है। जिसने जीवन भर मिट्टी ही जानी हो वह सोने को भी एक ढंग की मिट्टी ही समझेगा। हम वही पहचान सकते हैं जो हमारा अनुभव है। परमात्मा हमने जाना नहीं।

> **“हमारा जीवन क्षणभंगुर है लेकिन रास्ते अनेक हैं। समयबद्ध प्रक्रिया में हम और आप सभी बंधे हुए हैं। इसलिए जो समय से पिछड़ जाएगा, उसके जीवन का सही मतलब जीरो हो जाएगा।**

संसार में जिसने भी उस परमात्मा को पाया, उसने किसी शास्त्र को पढ़कर नहीं पाया। कई तो ऐसे उदाहरण हैं जिनको पढ़ना-लिखना भी नहीं आता था, वे भी उस परम उपलब्धि् को प्राप्त हुए। किस कला से परम उपलब्धि् को प्राप्त हुए कैसे उलझन से पार हुए? अगर सभी महान पुरूषों के जीवन पर नजर डाली जाए तो पता चलता है कि एक समर्पण ही था जिसने परमात्मा को उनसे मिला दिया। एक गुरूभक्ति ही थी, जिसने परमात्मा के प्रति समर्पण करा दिया। जिसने परमात्मा की कृपा का साक्षात दर्शन करा दिया। एक बार परमात्मा के होने में, उनकी कृपा के होने में विश्वास हो जाए और उनसे मिलने की ललक लग जाए तो समझो काम हो गया। उसके बाद परमात्मा खुद ही हमारा मार्ग दर्शन करने के लिए ना ना प्रकार के रूपों को धर कर आ जाएंगे।

भगवान कृष्ण ने भी गुरू रूप में ही घोषणा की है -

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

भगवान कहते हैं कि तू सारे झंझटों को छोड़ कर, सारे उपायों को छोड़कर केवल मेरी शरण आ जा। मैं तेरे सारे पापों को समाप्त कर दूंगा और तुझे मोक्ष भी दूंगा।

सामने केवल एक समर्पण ही है जो परमात्मा के साथ जीवात्मा का मिलन कराने में सक्षम दिखाई देता है।

जैसे नानक देव ने कहा कि -

जो तुद भावे साई भली कर तू सदा सलामत निरंकार।

हे प्रभु! जो तुझे भावे वही सही है। इसलिए मैं अपने आपको तेरी मर्जी पर छोड़ देता हूं। मैं तो अज्ञानी अंधेरे में खड़ा हूं, मेरे पास कुछ नहीं है जिसके आधार पर मैं तेरी खोज कर सकूं। तेरी मर्जी का अर्थ जैसे तू बैठाए बैठूं जैसे उठाए उठूं। जो तू करवाए करूं। ऐसा समर्पण हो जाए कि अपना कुछ नहीं जो कुछ भी करना है कर ले। लेकिन मैं उफ् नहीं

करूंगा। पूर्ण समर्पित हो जाने का मतलब है कि मुक्ति मिल गई।

कबीर, नानक, मीरा की धारणा परम समर्पण की है। इनका कहना है कि असंख्य उलझनों से भटकने से तो कुछ भी सार नहीं मिलेगा, न तुम्हें शास्त्र की चिंता करनी है, न तर्क, न प्रमाण, न दर्शन, इन सबकी भक्त के लिए कोई जरूरत नहीं। भक्त इनसे एक ही झटके में छूट जाता है वह झटका है -समर्पण। तब भक्त एक साथ ही सब छोड़कर कहता है कि जो तेरी मर्जी। कबीर, नानक, मीरा- ये कोई दार्शनिक नहीं थे। उन्होंने तो अपना अंतर्भाव बताया जैसा उन्होंने अनुभव किया। ये कहते थे कि संसार में उलझन ही उलझन हैं। इसलिए न तो यह विचार करो कि कौन-सा मार्ग है और कौन-सा नहीं, ऐसे में भटक जाओगे। नानक ने कहा, मैं दोनों की चिंता नहीं करता, जो तुझे भाये वही भला है और न मैं ये सोचता कि ज्ञानी क्या कहते हैं। न तो पुण्य, न पाप, न साधु, न असाधु, न तो मार्ग न कुमार्ग मैं कुछ नहीं चुनता, मैंने सब तुझपे छोड़ दिया। जहां तू ले जाए वही शुभ है जो मार्ग तू बता दे वही मेरा मार्ग है। मीरा के भाव भी ऐसे ही हैं। मीरा के भावों की सभी जगह पर चर्चा की जाती है। लेकिन लोग मीरा के नाम तक सीमित रह जाते हैं कम लोग ही हैं जो उनके समर्पण के बारे में चर्चा करते होंगे, अधिकांश लोग उनके प्रेम के बारे में चर्चा करते हैं। लेकिन यह प्रेम इतना भी सहज नहीं है जैसा कि आम आदमी अपने जीवन में चर्चा कर लेते हैं।

मीरा कहती हैं -

जो पहरावे सो ही पहरूं जो देवे सो खाऊं
मेरी उनकी प्रीत पुरानी उन बिन पल न रहाऊं
जहं बैठावे तहं ही बैठूं बेचे तो बिक जाऊं
मीरा के प्रभु गिरधर नागर बार-बार बलि जाऊं

मीरा कहती है कि मेरी अपनी कोई मर्जी नहीं है जो मेरा कान्हा कहेगा वही करूंगी, जैसा चाहेगा रह लूंगी। दे देगा तो प्रसाद समझकर खा लूंगी, नहीं देगा तो शिकायत नहीं करूंगी। पूर्ण समर्पण हो गया मीरा का। अब कहीं भी भटकने की जरूरत नहीं रही, मिल गया मार्ग।

ऐसे ही भाव कबीर के हैं-

जहं जहं चालूं परिक्रमा जो कुछ करूं सो पूजा।
जब सोऊं तब करूं दंडवत जानूं देव न दूजा।।

कबीर कहते हैं कि प्रभु! मैं नहीं जानता कि कैसे तेरी पूजा करूं, कैसे मनाऊं, कैसे तुझे रिझाऊं। बस, इतना जानता हूं कि हर जगह तू ही तू है, तेरा ही नूर है। इसलिए जहां-तहां चलता हूं तो समझता हूं तेरी परिक्रमा कर रहा हूं। जो कर्म करता हूं तो मैं मानता हूं कि तेरी ये पूजा है। यहां पर कबीर का पूर्ण समर्पण है। भक्त के लिए समर्पण ही अंत है, उसके पार फिर कुछ नहीं बचता। फिर परमात्मा डुबा दे तो भी भक्त को लगेगा कि उबार रहा है। वह मिटा दे तो भक्त को लगेगा कि बना रहा है वह अंधेरे में पटक दे तो भी भक्त को लगेगा कि हजारों सूर्यों का उदय हुआ है। लेकिन विश्वास मानिये वह ऐसा कुछ भी नहीं करने वाला है। वह अपने शरणागत भक्त की कुशलक्षेम का खुद ही ख्याल रखते हैं। तभी तो उनको कौशल कहा जाता है। वह परमात्मा हैं तो ऐसे ही नहीं हैं।

नानक, मीरा, तुलसी, कबीर, रामकृष्ण आदि भक्तों को परमात्मा ने एक पिता की तरह प्रेम दिया। ऐसे प्रेम दिया कि अपना ही रूप दे दिया। अपनी शक्ति यां दे डालीं कि जा जो कुछ कर ले। मेरे आधार पर किसी को भी वादा कर दे। मैं देख लूंगा। मेरे नाम से तुम्हें दुनिया जानेगी। मुझमें और तुझमें कोई अंतर नहीं रह गया है। लेकिन भगवान ने केवल एक शर्त रखी-

''मामेकं शरणं व्रज।''

कृष्ण कहते हैं कि केवल मेरी शरण में आ जा। भक्त के लिए सबसे सहज और सरल तरीका केवल समर्पण है, जिसके माध्यम से वह ईश्वर का प्रेमपात्र बन सकता है।

इसे ही शरणागति भी कहा जाता है।

गुरू भगवान ने तो स्पष्ट रूप से कहा कि शरणागति के बिना ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं है। जब किसी को मानोगे ही नहीं तो कैसे उसकी प्राप्ति हो सकेगी। उस परमात्मा को पाना है, उसकी कृपाओं को पाना है तो गुरू रूपी मार्गदर्शक के निर्देशन में चलकर देखो। भगवान ने भी यह सभी रास्ते गुरू रूप में आकर ही बताए हैं। इसलिए गुरू के निर्देशन में चलना बहुत जरूरी है।

परमात्मा तो तब कृपा करेंगे जब आप एक कदम उसकी ओर बढ़ाएंगे। लेकिन यह कदम कैसे बढ़ाया जाएगा, यह तो केवल गुरू ही बता सकते हैं। बस जरूरत है तो उनके दिखाए रास्ते पर विश्वास करने की, उनके प्रति समर्पण करने की और उनकी शरणागति लेने की।

सदा प्रासंगिक है गीता

महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(राष्ट्रपति सम्मानित)
प्रधान संपादक- "भारती" संस्कृत मासिक
(भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा
निदेशक-संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार)

गीता का कहना है कि अमुक फल मुझे प्राप्त करना है, यह जिद करके कर्म मत करो। तुम अपना फल स्वयं पूर्व निर्धारित करने वाले कैसे हो सकते हो?

उपनिषदों का सारभूत संदेश प्रसारित करने वाली जगद्गुरु श्रीकृष्ण के मुख से निकली उपनिषद् को भगवद्गीता कहा गया है ('भगवद्गीतासु उपनिषत्सु' यह घोषणा प्रत्येक अध्याय के अंत में है)। यह भारत के दार्शनिक और सांस्कृतिक चिंतन का नवनीत तो प्रस्तुत करती ही है, समस्त मानवीय जीवन यात्र के लिए ऐसा सुपाच्य पाथेय देती है, ऐसी संजीवनी देती है जो प्रत्येक युग में, प्रत्येक देश में प्रासंगिक रहती है। इसके उपदेश या संदेश देश- काल की सीमा में नहीं बंधते, यह इसका अनन्य- सामान्य गुण है । इसका कारण भी स्पष्ट है। विश्व के प्रायः सभी धर्मों के आधार ग्रन्थ और उपदेश देने वाले धर्म ग्रन्थ ऐसे धर्मोपदेश देते हैं जो सभी प्राणियों के लिए मान्य हों, सब पर लागू हों। किन्तु गीता का अगुच् अभिग्म हैं 'पात्र भेद' से मानवों को अभ्युदय का मार्ग बतलाना। गीता में आपको श्रेय के और साधना के अनेक विकल्प मिलेंगे।

इस बात पर शताब्दियों से विवाद और शास्त्रार्थ होते रहे हैं कि गीता ज्ञानयोग का शास्त्र है, कर्मयोग का या भक्ति योग? सैकड़ों आचार्यों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से इसके भाष्य किये हैं, हजारों ने इसके अनुवाद किये हैं। इसके अभिगम का, इसकी सफलता का यही रहस्य है कि यह कर्मयोग भी सिखाती है, ज्ञानयोग भी और भक्ति योग भी। और इनमें से किसी को भी जीवन में उतारने के लिये जिस चिंतन की आवश्यकता है, उसके इनमें से कोई भी योग सफल नहीं हो सकता, अतः उसके लिये बुद्धि योग सिखाती है। अतः इसका मुख्य प्रतिपाद्य 'बुद्धियोग' ऐसा, जयपुर के वेदविद्यावाचस्पति पं. मधूसूदन जी ओझा की स्थापना है। गीता में समझाये गये ये सारे

मार्ग पात्र भेद से लागू होते हैं। ज्ञानी के लिये ज्ञानयोग श्रेष्ठ है- 'नहि ज्ञानेन सदृश पवित्रमिह विद्यते ।'

जो कर्मठ हैं, समर्थ हैं, विजय, विभूति और पुरुषार्थ के लिए संघर्ष कर सकते हैं, उनके लिए गीता कहती है-

'सिद्धिर्भवति कर्मजा (4-2)' तथा

'कुरु कर्मव तस्मात्तवं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् (4-5)।'

ये दोनों मार्ग शारीरिक रूप और बौद्धिक रूप से समर्थ साधकों के लिए ही संभव हैं। बड़ी संख्या में देश में वृद्ध, अशक्त, अपंग, अनपढ़, निराश्रित पुरुष व महिलाएं आदि भी हैं। ये दोनों मार्ग उनके लिए नहीं हैं। ऐसे साधकों के लिए भक्ति मार्ग का उपदेश किया गया है। कर्म तो वे भी करेंगे किन्तु अनासक्ति योग की साधना करने वाला बुद्धियोग उनमें विकसित नहीं हो सकता। अतः वे जो कर्म करें उसे प्रभु को अर्पित कर दें। गीता उन्हें इतनी सी भक्ति सिखाती है। ये सारे मार्ग पात्र भेद से गीता में स्पष्ट किये गये हैं।

दुर्भाग्यवश यह हुआ कि मध्यकाल भक्ति आंदोलन गांव-गांव, नगर-नगर में फैला, बूढ़े-जवान, बालक-बालिका, महिला-पुरुष सबको भक्ति मार्ग में चलवाने की ऐसी लहर आई कि सब मंदिरों में आरती करने, भजनानंदी बनने और नाम-जप करते हुए घर में निठल्ले बैठे रहने की आदत पालने लगे, जबकि कटु सत्य यह है कि गीता में नाम जप से सिद्धि होगी- यह कहीं नहीं कहा गया। 'स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्' का अर्थ केवल नाम-जप नहीं है। बारहवें अध्याय में पात्र भेद से किस प्रकार योग की सिद्धि होती है, यह बड़े सरल ढंग से अनेक विकल्प देकर बताया गया है

भरयो हि ज्ञानमभ्यासात् ज्ञानात् ध्यान विशिष्यते।

ध्यानात् कर्मफलत्यागः त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्॥ (2-12)-

यह तो केवल मार्ग गिनाने वाला श्लोक है किन्तु पूरा अध्याय यह बताता है कि जो अव्यक्त ब्रह्म साधना में लगते हैं वे ज्ञानमार्गी हैं, उनका मार्ग कठिन है (2-5)। अतः जो इस मार्ग पर चलना कठिन पाएं वे अभ्यास योग का अभ्यास करें। अनेक भाष्यकारों ने अभ्यासयोग का अर्थ शास्त्राभ्यास, ध्यान, मनन आदि किया है, किन्तु इसका अर्थ भजनानंदी बन जाना नहीं किया है। कुछ लोग इसका अर्थ नवधा भक्ति करते हैं जिसका गीता के टेक्स्ट में कहीं भी समर्थन नहीं मिलता। गीता पात्र भेद से जितने मार्ग बतलाती है, उनमें नाम जपते रहना कहीं नहीं है

देखें श्लोक (2-10-11)-

अभ्यासेप्यसमर्थोसि मत्कर्मपरमो भव।

मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥।

अथैतदप्यशक्तोऽसि. कर्तुमद्योगमाश्रितः।

सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्॥

अभ्यास योग को जो कठिन पाएं वह कर्म करते रहें, फल में आसक्ति छोड़ दें, यह कहती है गीता। यह करना भी कठिन पाएं तो जो कर्म करें उसे भक्ति पूर्वक भगवान को समर्पित कर दें। इन समस्त विकल्पों में यह कहीं नहीं कहा गया कि जो यह भी न कर सकें वे भजनानंदी बन जायें और मेरा नाम जपते रहें। किन्तु अनके सदियों से भजनानंदियों ने यही किया और जबसे ऐसा करना शुरू किया, अकर्मण्यता ने, लाचारी ने, नपुंसकता ने उन्हें ऐसा घेरा कि कोई भी आक्रांता कहीं से भी आकर उन पर शासन करता रहा। वे निरंतर गुलाम बने रहे। भजनानंदी वृद्धजन, महिलायें, अशक्त आदि तो समझ में आते हैं किन्तु सभी ऐसे ही बनेंगे तो वही होगा जो भारत में पिछली आठ सदियों में हुआ।

इस अकर्मण्यता की नींद से जगाने के लिये उन्हें किसी बालगंगाधर तिलक की आवश्यकता हुई जिसने यह पाया कि जो गीता 'युद्धस्व विगतज्वरः' की शिक्षा देती है, 'मामनुस्मर युद्ध च' कहती है उसे हम कैसे भूल गए? उसे भक्ति और नाम जप की माला किसने कब बना डाला। महामना मदनमोहन मालवीय तो केवल जल चढ़ाकर माला जपते रहने को गीता के उपदेश के विरुद्ध मानते थे। वे कहते थे कि भगवान कृष्ण ने निष्कर्ष में स्पष्ट कर दिया है कि यह सारी संसारयात्र मेरी चलाई हुई है, अतः कर्म करो । 'स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः', केवल पूजा करना कभी सिद्धि नहीं देगा। अपने नियत कर्म पूरे मनोयोग से करना ही मेरी पूजा है

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानवः॥ (8-46) -

'तुम्हारा कर्म ही मेरी पूजा है' यह स्पष्टोक्ति पूरी तरह नजरन्दाज कर दी गई थी। उन सदियों में जिनमें हम गुलाम रहे थे, केवल मंदिरों में घंटी बजाने को पूजा समझते थे। 'स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य' को बिल्कुल भूल गए थे।

तिलक की मान्यता के अनुसार कर्मयोग का, गांधी की मान्यता के अनुसार अनासक्ति योग का तथा विभिन्न भाष्यकारों और व्याख्याकारों के अनुसार सफल संसार यात्र का मार्ग पात्रता के अनुसार अनेक विकल्प देकर समझाने वाली गीता का मर्म हमने समझा नहीं और समझाने वालों ने अपने-अपने चश्मे से उसे देखकर उसका स्वरूप जो बताया, हम उसी के पीछे भागते रहे। अपना स्वयं का विकल्प हमने ध्यान से सोच कर चुना नहीं, चुना तो उस पर अमल नहीं किया, ऐसा मुझे लगता है। केवल गीता का पाठ करते रहे, आचरण नहीं किया। आज की नई पीढ़ी ने और कलुषित मानसिकता वाले उस वर्ग ने जो देश की सेवा करना तो दूर, काम करना भी नहीं चाहता, केवल अपना लाभ चाहता है, गीता के उस बहुचर्चित श्लोक का इस प्रकार रूपांतर कर अपना उल्लू सीधा करना शुरू कर दिया है। यह श्लोक हर जुबान पर है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

किन्तु आज की पीढ़ी ने अपनी जो मानसिकता बना रखी है, उसने इसे यों बदल दिया है-

फलेष्वेवाधिकारो मे मा कर्मणि कदाचन।
तदेव हि फलं लप्स्ये विना कर्म, विना श्रमम्॥

काम न करना पड़े, मेहनत न करनी पड़े, पढ़ाई में खपना न पड़े, इसलिए नकल करके, परीक्षक को रिश्वत देकर या और किसी तरीके से पास हो जाएँ- यह चाहने वाला छात्र बिना कर्म के फल चाहने वाला नहीं है तो और क्या है ? फल पर मेरा अधिकार हो, यह चाहता है वह।

गीता का मा कर्मफलहेतुर्भुः यह उपदेश बहुचर्चित रहा है। इसके अनेक भाष्य किये गये हैं। यह प्रत्येक युग में प्रासंगिक है, आज भी अत्यन्त प्रासंगिक है। गीता का कहना है कि अमुक फल मुझे प्राप्त करना है, यह जिद करके कर्म मत करो। तुम अपना फल स्वयं पूर्व निर्धारित करने वाले कैसे हो सकते हो? ऐसा करने पर वही होगा जो आजकल आए दिन हम अखबारों में पढ़ते हैं कि अमुक छात्र ने प्रथम श्रेणी में न आने पर आत्महत्या कर ली। उसने अपना फल निर्धारित कर कर्म किया था। वह यदि सोचता कि मैं जो चाहता था वह हो जाता तो अच्छा था किन्तु नहीं हुआ तो क्या पता ऊपर वाला आगे जाकर मुझे कोई और अच्छा फल देने वाला हो। तब वह निराश नहीं होता, कार्य से विरत नहीं होता। यह है गीता की सार्वदेशिकता और सार्वकालिकता कि प्रत्येक देश और प्रत्येक युग में उसका संदेश सार्थक रहता है। आवश्यकता है उसकी युगानुरूप व्याख्या की। जो हम नहीं करते या करना नहीं चाहते।

गीता का बारहवां अध्याय भक्ति मार्ग को समर्पित माना जाता है क्योंकि उसमें श्री कृष्ण ने यह बतलाया है कि किस प्रकार का भक्त मुझे सर्वाधिक पसंद है, किन्तु भक्त के जो गुण बतलाए हैं वह उस आदर्श नागरिक के गुण हैं जो प्रत्येक देश में, प्रत्येक युग में प्रासंगिक हैं। ये ऐसे जीवन मूल्य हैं जो मानव को सर्वाधिक स्पृहणीय, आदर्श, सुखी, सच्चरित्र और अनुकरणीय मानव बना सकते हैं।

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ।।13।।
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चयः ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।।14।।

बाद में हम पाते हैं कि बौद्ध धर्म में उपदिष्ट गुण मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा का किस नायाब ढंग से इन श्लोकों के साथ समन्वय है। श्रीकृष्ण ने उन्हें पूर्व में ही भक्ति से भी जोड़ दिया था। ऊपर के दो श्लोकों की अंतिम लाइन को छोड़ देवें तो शेष सारे गुण बौद्ध, जैन, ईसाई, मुस्लिम आदि सभी धर्मों के जीवनमूल्य इन शब्दों में आ गए हैं। 'मैत्रः करुण एव च' में मैत्री और करुणा बौद्ध धर्म में हैं। ममत्व और अहंकार का वर्णन ईसाई धर्म में भी है।

सदा संतुष्ट रहने वाला, यतात्मा, दृढ़ निश्चय व्यक्ति होना ऐसे जीवन मूल्य हैं जो भक्ति में चाहे कम हों, व्यावहारिक जीवन में अत्यन्त आवश्यक हैं। आज के जनतंत्र में जो नेताओं के जीवन मूल्य हैं, वे इसमें भक्त के लिए बता दिए गए हैं।

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः। जो ऐसी बात न बोले और कहे जो जनता और मीडिया को उद्वेगकारक हो और जो गुहार करने आने वाले लोगों के हुजूम से न घबराए, वह आदर्श नेता होता है।

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥

उपरोक्त श्लोक में वे सारे गुण बता दिए गए हैं जो आज संयुक्त परिवार और समाज में सफलता के जीवन मूल्य हैं। यहाँ गीता ने 'अनपेक्षः' शब्द लिखा है 'निरपेक्षः' नहीं। आज सारी समस्याएं इसी कारण पैदा होती हैं कि हम परिवारजनों से, कार्यालय के साथियों से, सरकार से तरह-तरह की अपेक्षाएँ मन में पाले रहते हैं, उनके पूरा न होने पर क्रुद्ध हो जाते हैं, अनपेक्ष रहो तो कोई समस्या नहीं होगी। 'दक्ष' शब्द यहाँ 'चतुर' का वाचक नहीं है जैसा सामान्यतः समझ लिया जाता है। आज समाज में 'दक्ष' याने 'सयाने' लोग ज्यादा हो गए हैं, वे कभी सज्जन नहीं कहला सकते, आदर्श नहीं हो सकते। शांकरभाष्य आदि भाष्यों ने इस शब्द का इसीलिए, जो गीता का अभीष्ट अर्थ दिया है वह आज अत्यंत प्रासंगिक है।

दक्ष का अर्थ संस्कृत में होता है 'दक्षिण' मानसिकता वाला, निराडम्बर; जो बांका न हो, सीधा हो। दूसरे शब्दों में 'पॉजिटिव' या सकारात्मक मानसिकता वाला हो, ऐसा व्यक्ति अभीष्ट है। साथ ही सर्वारम्भ परित्यागी हो अर्थात् अपनी ओर से प्रपंच, लिप्सा या आडंबर पैदा न करे। ये सारे गुण कहने को तो 'भक्त' के लिए बताए गए हैं किन्तु हैं सारे मानवीय गुण; भक्तों से ही उनका संबंध हो ऐसा नहीं है बल्कि यहाँ क्षमा प्रार्थना पूर्वक तथाकथित (प्रपंची) धर्मगुरुओं और दिखावटी भक्तों के आक्रोश का खतरा मोल लेते हुए भी मैं यह कहना कि आज के अधिकांश भक्तों में ये गुण ढूंढे नहीं मिलेंगे। ये सारे मूलभूत मानवीय मूल्य हैं जो सदा, सब अंचलों में प्रासंगिक हैं। यह है गीता की सार्वकालिक प्रासंगिकता, सारगर्भितता, सार्थकता जो इस देश की अमूल्य थाती है। इसी संजीवनी के कारण सहस्राब्दियों से इस देश की संस्कृति जीती-जागती फलती फूलती रही है।

Contribution of Śri Rāmānuja to Interreligious Harmony

Prof. M.A.Lakshmithathachar &
Dr. M.A. Alwar

Sri Ramanuja was a philosopher par excellence. He propagated the philosophy called Viśistādvaita. The religious side of that philosophy is called śrivaishnavism. It is often said that philosophy without religion is lame and religion without philosophy is blind. Hence philosophy and religion should go hand in hand for their survival. In fact, on one hand the religious aspects are strenghtened by theoretical foundations and, on the other hand, philosophy is strenghtened by the practice of religion. In śrivaishnavism, both religious practices and theories are inseparably associated as it can be witnessed in the several rituals that are performed by the śrivaishnava-s.

Rāmānuja thought of bringing religious harmony in India by solidly depending upon the sanātana-dharma as enunciated in the Vedic texts. There was a need to Rāmānuja to expound the sanātana-dharma on the basis of the Vedic texts since Vedas were accepted as THE authority during his time. Hence there was a need to reinterpret the Vedic texts to unite the whole of the society and bringing perfect harmony. It may not be out of place to mention here that even during his time there were several schools of Vedānta, each school interpreting the Vedic texts in its own way and spreading a sort of religious disharmony. Rāmānuja felt a need for the samanvaya or synthesis of these different interpretations. Since he achieved that samanvaya or synthesis, he is also called a samanvaya ācārya. During his time there were three important schools, namely the abheda school, that is theory of identity of the reality, advocated by Śankarācārya, the bheda school or theory of duality, advocated by some and the bhedābheda school, that is duality and non-duality school, advocated by Bhaskara. When the society was torn asunder by the various interpretation of different ācāryas, it fell into the lot of Rāmānuja to unite them together to unite the society. Hence Rāmānuja thought of finding a solution in the Upanishads themselves to bring harmony among the different schools of thought. In his outstanding work Vedarthasangraha, which deals with the method of interpretation of the Upanishads, he raises a question: "kim atra tattvam? Bhedo va abhedo va dvyatmakata va koyamarthah samarthito bhavati? Sarvasyapi vedavaedyatvat sarmvam samarthitam" that is "what is the reality? Is it duality, non duality or duality-non duality?" His answer is that all the three can be accepted because the Upanishads themselves have accepted them all.

With this perspective Rāmānuja tried to interpret the Upanishads passages which were seemingly contradictory. In fact, there were passages dealing with the identity of reality, others dealing with the duality of the reality and there were also passages dealing with duality and non duality. If Śankarācārya laid more stress on the passages dealing with the identity of Supreme Reality and Madhvācārya and his followers on the passages dealing with the duality of the Supreme Reality, while trying to resolve the conflicts, Rāmānuja was of the opinion that the entire body of the Upanishadic texts present a coherent view of the reality. Hence there cannot be any conflict in the enunciation of truth. With this perspective, he tried to find the solutions to resolve the conflicts in the Upanishads themselves. Similarly he did with regard to statements describing the Brahman with attributes and the Brahman devoid of attributes. Fortunately for Rāmānuja he could find the clue for the religious harmony in the Upanishads themselves. No doubt there were some seemingly conflicts in some passages in the Upanishads when those were considered outside the original context. After properly studying the conflicting passages, he could come across some statements which would both reconcile the conflicting passages and resolve the conflicts themselves. Rāmānuja called them ghataka-srutis or reconciliatory passages.

Now let us see how Rāmānuja brought a sort of harmony among the systems of philosophy advocating duality, non-duality and so on. Śri P.M. Śrinivasācārya, a great professor of philosophy, clearly mentions that Rāmānuja interprets the Upanishads more liberally that literally. To resolve the conflict between the duality or non-duality of the Supreme Reality, Rāmānuja stressed upon one interesting concept, namely śariraśariribhava, which he could find in the Upanishads themselves (like yasya-athma-shariram etc...). Utilising this concept, Rāmānuja stated that both the insentient and sentient objects form the body of the Supreme Brahman. They are in fact part and parcel of the Supreme Brahman. When you think of the body and the soul, they can be differentiated mentally but not physically, in the same way, the identity of the Brahman can be proved taking the body and soul together and even duality can be accepted differentiating the body from the soul.

One more dimension of this śariraśariribhava considers this entire universe consisting of sentient and insen-

tient beings as forming the body of the Supreme Brahman. In other words, the universe pervaded by the Supreme Being could be considered as a super system. In this whole system, there are certain subsystems. Let us take the example of a human being. A human being is a physical system plus consciousness. In the body of a human being there are so many bacteria and cells which are functioning with a sort of limited freedom. These subsystems function in such a way that they will not harm or destroy the main system itself. If there is conflict between the subsystems of a human being his body collapses, therefore the subsystems in the body should function in a harmonious way to allow the main system to function. Similarly if the whole system, that is the universe, which is a combination of three great realities namely matter, individual souls and the Supreme Brahman has to function properly, each subsystem, like the system of the human being, should function in an harmonious way in order to allow the main system, the universe, to function. This concept of śariraśariribhava, a discovery of Rāmānuja in the Upanishads, is sure to bring harmony among the people in all walks of life. In fact, the subsystems, like the system of the human being or of an animal, is said to be the microcosm while the universe pervaded by the Supreme Brahman is the macrocosm. There should not be any conflict between the macrocosm and microcosm; they should function in unison with each other. At the ethical level too, we must think that every being should be thought of as the body of the Supreme Brahman, therefore there is no question of hating anybody, killing anybody or destroying any system in this world.

Moreover, using these concepts Rāmānuja also advocated that not only that God can be called by any name, but that any name referring to any object in this world, ultimately connotes the Supreme Brahman Himself. Most of the times, religious fundamentalists claim that their God is superior to the Gods of others. This has created sufficient disharmony in the society. Religious unrests, terrorism, etc are taking place only on account on this fundamentalism. Rāmānuja says that any word uttered here referring to any object ultimately refers to the Supreme Being who is enshrined in all these physical objects. For instance the word "book" may refer to the specific object; but it also refers to the conscious principle present in it and to the Supreme Brahman who has pervaded that object as its inner reality. Similarly a name like Gopal, referring to a human being, refers first to his physical body, then to the individual soul of that body and finally to the inner soul present in that soul as antaryami. If ordinary words referring to different objects ultimately connote the Supreme Brahman, where is the question of the words like Allah or Jesus not connoting the Supreme Brahman? Hence comes the theory of Rāmānuja, namely sarve shabdah paramatmanama eva vacakah, that is, all the words ultimately refer to that Supreme Brahman only. This unique theory is most useful in bringing about spiritual harmony. These are some of the examples of creating religious harmony at the philosophical level.

Now let us try to deal with some of the aspects of religion which were initiated by Rāmānuja to bring in a religious harmony. Among the śrivaishnava saints, Sri Nammalwar (also known as Shatakopa Suri) is considered to be an outstanding mystic. No doubt he was born in the fourth varna, that is the śudra varna, but as soon as he was born he was not overpowered by the śhata-vayu, which is the case in all other beings. When the child is in the womb, it is capable of remembering all its previous births and he keeps thinking: "let me not undergo the pain of being born again and again in this cycle of births and deaths". This feeling of the child completely disappears as soon as he is born because of the overpowering of a special air called śhata-vayu. The result is that he forgets all his previous thoughts. This did not happen in the case of Nammalwar because he was born as a siddhayogi. Nammalwar was left under a tamarind tree by his parents since he was not responding to any nurturing. Nearly for 16 years Nammalwar was in yoga samadhi and in his samadhi state he was able to visualize the different deities found in the holy shrines and sing the glory of these in the form of mystic poetry, with a spontaneous outflow of his experience. Among the śrivaishnavas, Nammalwar is respected as the greatest mystic of all ages and he has been given the highest position in the hierarchy of the śrivaishnava ācāryas. In fact, Rāmānuja himself is said to be a great philosopher because he has taken refuge under the lotus feet of Nammalwar. The mystic poetry which emerged from Nammalwar is given the highest status in the literary works of śrivaishnava called dravidaveda. This canonization of a secular literature that came out of a mystic who was born in the fourth class is itself a revolutionary act of Rāmānuja to create religious harmony. The Dravida divyaprabandhams, which are considered to be dravida-vedas, are sung in chorus in front of the deity whenever a deity is taken on procession in the śrivaishnava temples, whereas the Sanskrit Vedas are chanted in chorus behind the deity. This is the primary position given to the secular literature through which Rāmānuja could bring together people belonging to different classes under the umbrella of bhakti and prapatti. For the very same reason, Rāmānuja is designated as maran-adi-panindu-uyndavan. Rāmānuja and his predecessor ācāryas were of the opinion that in the spiritual field there should not be any distinction of caste, creed or sex. According to this view, any living being is entitled to get liberation irrespective of its physical state. It is difficult to bring equality among men belonging to different caste and creeds. Just consider how, in spite

of the strenuous efforts of the government, the caste distinctions still persist in India. Rāmānuja went a step ahead and felt that in the spiritual field no such distinction should be allowed. According to him, everyone in this world is entitled to get liberation and reach the celestial world. Some other systems of vedānta advocate that there should be an evolution in the human beings and people belonging to other castes should slowly evolve until they will born as Brahmins and thus entitle themselves for liberation. But śrivaishnavism does not prescribe such limitations and anybody who aspires for liberation will be blessed by God and finally get salvation.

Two important anecdotes can be mentioned here to highlight how this was really practiced in śrivaishnavism. The first is the story of Maraner Nambi. Maraner Nambi was a dedicated disciple of Yamunācārya, the grand-teacher of Rāmānujācārya. Though Maraner Nambi was born in a family of harijans, he was a pious man practicing total renunciation. He led such a simple life, without even eating food like others men do. In fact, after ploughing his wet lands, he used to drink two handful of that turbid water and this was the only means of his sustenance. When Yamunācārya, his spiritual guru, was affected by carbuncle, a serious dissease, Maraner Nambi persisted that the disease should be transferred to him in order to make his guru free from suffering. Finally Yamunācārya agreed and Nambi began to suffer. At that time, Mahapurna, who was Nambi's classmate and a devout Bramin, used to nurse him continuously, but in spite of the tender care of Mahapurna, Nambi died at last. Mahapurna performed his obsequies in the manner it would be performed to a highest bramin. When the brahma-medha-samsskāra was performed to Mahapurna, many fundamentalists of that time objected to the fact that Mahapurna was performing such a samskāra for a harijan. So Mahapurna brushed them aside stating that in the same way that 'he was not superior to Rāma and also Maraner Nambi was not inferior to Jatayu'. This episode refers to Rāmāyana, when Rāma performed brahma-medha-samskāra to Jatayu, who was an vulture. This shows the catholicity of the outlook of śrivaishnava ācāryas. The second episode refers to Rāmānujācārya himself. Rāmānuja was very eager to learn the secret teaching of the 8-syllabled mahāmantra from a great ācārya known as Gosthipurna. Gosthipurna was a very tough man and it was not easy to convince him to reveal the secret. For this purpose, Rāmānuja actually walked from Śrirangam to Gosthipuram (more than 100 miles away) 18 times and only at the 18th time, being convinced of the seriousness and sincerity of Rāmānuja, the great ācārya agreed to convey the secret to him, of course, on some conditions. He told Rāmānuja that he should not reveal the secret to any undeserving person. Finally Rāmānuja promised that he would not divulge the secret to any undeserving person, under any circumstances. But as soon as he received the secret doctrine, Rāmānuja climbed the dome of the Tirukkottiyur temple and announce that any person who had the desire of attaining salvation may assemble there as he was telling the secret teaching of the ācārya to everyone, irrespective of the caste, creed or sex. In order to facilitate them to get liberation he told the secret teaching without observing any of the formalities and procedures to the thousands of people who assembled there. When Gosthipurna heard about the indiscriminate and adventitious act of Rāmānuja, he could not control his anger. Instantly he approached Rāmānuja and asked him whether he knew what would be the result of his indiscriminate act. Reminded of the promise he had made, Rāmānuja replied: "Revered Sir, I know it quite well. For a person who has disobeyed the orders of his ācārya is consigned to the most atrocious hell called Raurava". When the teacher asked him why he indulged in this act, Rāmānuja replied: "Sir, you have told me that anybody who receives this secret teaching will go to the celestial abode of the Lord, known as Vaikunta. If thousands of this people, by this secret teaching, will be able to reach Vaikunta and I alone will be consigned to hell, I am prepared to do that". Gosthipurna immediately realised the broadmindedness and matchless compassion of Rāmānuja for the souls struggling in the bondage of samsāra. At once he embraced him saying: " Oh Rāmānuja you are my master (emberumanar)". This episode clearly shows how deeply Rāmānuja was concerned about the spiritual emancipation of each and every human being in this world.

Finally, it can be said that śrivaishnavism is a way of life rather than a religion. Anybody can embrace śrivaishnavism irrespective of the caste, creed or religion one belongs to. It should also be noted that Rāmānuja was the first person to give entry to the temple to the harijans during the 12th century itself. According to the history of Melkote, my native place, Rāmānuja had gone to fetch the procession deity by name Lord Chaluvaraya which was in the custody of a Nawab in Delhi. When he was bringing with great difficulty the icon from Delhi, in various places he was supported by harijans and other tribals. As a sign of his gratitude he allowed them to carry Lord Caluvaraya during Brahmotsava. Even today, on the 8th day of Brahmotsava, harijans of Karnataka celebrate this utsav with great devotion and dedication. Such was the catholicity of Rāmānuja. Many of the ideas advocated and propagated by Rāmānuja, if adopted in the modern society, will give no chance for terrorism and fundamentalism. His ideas will pave the way for a peaceful, harmonious society.

BEYOND THE DARKNESS

Dr. Karan Singh
Former Member of RajyaSabha

There comes a time, which comes but rarely in human history, when mankind stands poised between the weight of the past and the challenges of the future; when the old collapses and the new struggles desperately to be born; when the promise of a higher consciousness begins to unfurl its potentialities, but the forces of hatred and destruction cast their ominous shadow over generations yet to come; when knowledge grows apace but wisdom languishes; when science and technology give us incredible gifts, but also open the floodgates, to unimaginable destruction; when we have within our grasp the possibility by the end of this century of abolishing poverty and hunger, illiteracy and unemployment from the face of the earth, but when all the fruits of human history and civilization could by then have been abolished in a nuclear conflagration destroying not only the human race but all life on our planet. It is tragic irony that Mother Earth, which has nourished and sustained consciousness for a billion years up from the slime of the primeval ocean is today herself imperiled by the human race which is in the vanguard of evolution. What is required at this critical juncture is that the many streams of our separate aspiration should merge into a unified prayer for peace and well-being, so that this may evoke a powerful and effective response from the divine power to save mankind from total destruction. Sri Krishna in the Gita clearly says that whenever the e human race' is in real danger, a decisive divine intervention takes place for the establishment of Dharma, righteousness, On the earth. religion, could symbiosis, a merging of the

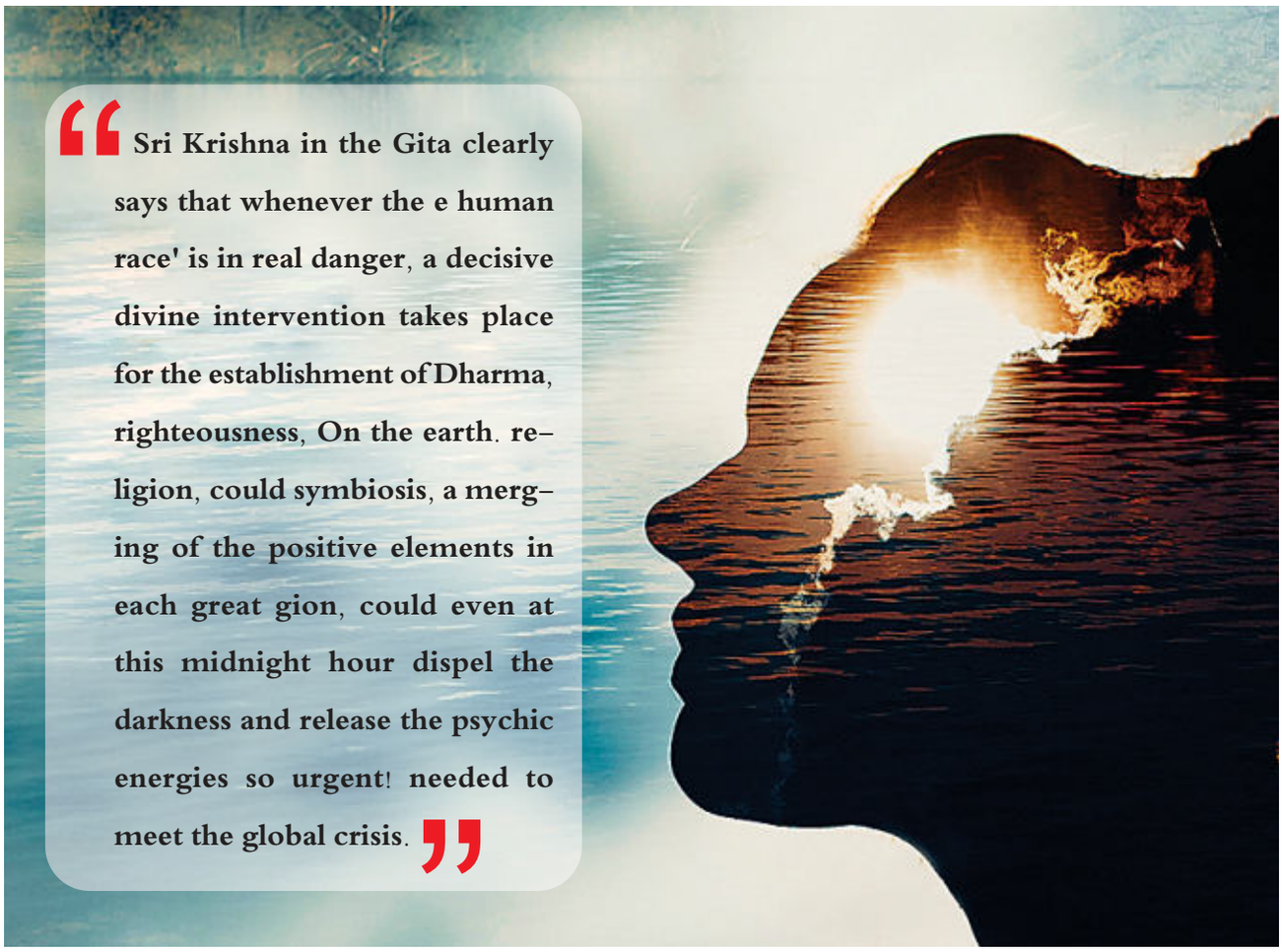

“Sri Krishna in the Gita clearly says that whenever the e human race' is in real danger, a decisive divine intervention takes place for the establishment of Dharma, righteousness, On the earth. re–ligion, could symbiosis, a merg–ing of the positive elements in each great gion, could even at this midnight hour dispel the darkness and release the psychic energies so urgent! needed to meet the global crisis.”

positive elements in each great gion, could even at this midnight hour dispel the darkness and release the psychic energies so urgent! needed to meet the global crisis. This is borne out by a contemporary revelation in the astonishing book The Present Crisis by Pandit Gopi Krishna who passed away only a year ago.

This not only graphically portrays the danger of annihilation, but predicts that nuclear war can be aberted if enough people become aware of and grow into the higher consciousness. Sri Aurobindo in the East and Teilhard de Chardin in the West, have spoken eloquently of the crisis that loon-is ahead and the evolutionary leap that is required to overcome it. Hinduism, the religion based on the Vedas, the most ancient living scripture available to man, has placed before us the noble ideal of the oneness of mankind—Vasudhaiva kutumbakam—and proclaims the divinity inherent in each human being, the essential unity of all religions and the brotherhood of the family of man. We must rediscover the core of divine power that resides in each individual, that underlines all creeds and dogmas, that cuts across all the artificial barriers man has so painstakingly erected down through the long and tortuous corridors of time, and that holds within it the key to our survival and spiritual evolution. It is these truths that we must rediscover, for, as Jesus rightly said, "Ye shall know the Truth and the Truth shall make you free," and as the Upanishad proclaims—Satyameva Jayate Nanritam, -the Truth alone prevails, not the falsehood.

At this moment of supreme peril let us cleanse our minds and hearts of internecine bitterness and suspicion, for to survive we must together forge a higher consciousness that embraces all the religions of man, including the non-believers, so that our children and theirs can flourish into the millennium ahead. Many are the wars that have been waged in the name of God, millions are the human beings who have perished and continue to perish in these conflicts, while the forces of atheism also extend their sway over large segments of the human race.

Let us now, we who call ourselves men and women of religion, wage peace with the same zeal with which we once waged war, so that the era of human conflict may pass into the pages of history and we may embark on a new adventure of love and co-operation, of mutually assured welfare rather than mutually assured destruction. Let us not wait for the day after, but spread the massage of peace and harmony to the ends of the earth on the day befive now, when we can still hear the laughter of children and feel the warmth of human relationships, when we can still respond to the beauty of music and the ennobling experience of creative art; when our hearts can still resonate with the wisdom of great literature and the sovereign vibration of love. And let us so reorganize planetary resources that the two-thirds of humanity still struggling at subsistence level is assured of the material and intellectual inputs necessary for a decent civilized existence; so that millions of children do not go to sleep at night hungry and underfed, or grow to adulthood with stunted minds and bodies; so that millions do not perish from communicable diseases, including new and virulent strains that baffle medical science, or waste away from malnutrition until their very humanity is reduced and distorted.

All this can be achieved if even ten percent of the world's resources now consumed by increasingly lethal weapons of overkill are diverted for peaceful purposes, for we must remember that talk of peace loses much of its meaning unless it is accompanied by justice and freedom for each individual on earth, because each person is unique and has the potentiality of making a unique contribution to human civilization. The air is thick with foreboding, and dark clouds of conflict seem to be gathering on the horizon.

And yet those of us who tread the inner path must keep faith amidst the encircling gloom. Thousands of years ago a great seer of the Upanishads proclaimed in ecstasy—"I have seen the Great Being shining in splendour on the other shore beyond the darkness." Let all of us without delay open our deepest selves to the light and the power of that Great Being, so that we are irradiated by divine luminosity and develop the wisdom to act in such a way that our beautiful planet, shall become not a burnt-out cinder circling the sum into eternity, but the cradle of the greater man reflecting the power and the glory of the higher consciousness.

Scriptural Tradition and Rebirth

K.N. Rao
Writer

Gita's Sublimest Lessons: Gita and Rebirths

The theme of the Gita is the shining light of divinity. The preaching here is most optimistic showing that Divine Illumination alone leads to liberation and freedom from the cycle of births. It is why Gita is, and will always be, the greatest book on this earth. The message of the Gita is clear: Salvation is the birth right of every being if he devotes himself to Him. The theme of the Gita revolves round the problem of getting out of the cycle of births and rebirths. That hope exists for everyone becomes clear in the Gita, unlike the fear of eternal damnation or hell fire, preached by fear inducing fundamentalist religions. There is as much hope for those whom we call sinners and the downtrodden as for others. The path of illumination is devotion to Him and surrendering the fruits of actions to Him. It never is stopping the doing one's karma. After reading the Gita every wise man decides—start doing your karma properly but stop desiring. A brief summary of what the Gita says about rebirths is given here.

Chapter Two

To help Arjuna overcome his terrible mental confusion created by the agonizing feeling that in the battle of Kurukshetra he would have to fight against his own cousins, uncles, gurus and respected elders, Lord Krishna started his preaching, the greatest ever done for man, by explaining three essential points first.

What is Life and what is Death?

1. It must be known what is death before knowing what is life. It must be known because the delusion caused by the grief of death must be overcome. Boyhood, youth and old age are the stages of life one has to pass through.

2. It is certain that those who are born will die and will be reborn. One should not grieve over these inevitable events.

3. An equanimous man renounces the fruits of his actions, frees himself from the shackles of birth and attains supreme bliss.

— Shlokas 13,27,43,47,50,51

Chapter Four

Lives Before Lives - The Lord tells Arjuna that both He and Arjuna had passed through many lives which were known only to the Lord while Arjuna did not know. The Lord is Unborn but manifests Himself through his Yogamaya (divine energy creating illusion) but keeps His own Prakriti (nature) under control. The purpose of this manifestation or incarnation is to protect the virtuous and destroy evil-doers. All this has to be done to establish Dharma (righteousness). It is for this that the Lord incarnates from age to age. God's incarnation and activities are divine. He who knows it gets liberated from the cycle of births. In such a state all attachments of the devotee vanish. Divine Knowledge is what he has now. He gets liberated.

— Shlokas 5, 6, 7,8,23

Chapter Six

Results of steadiness or vacillations in spiritual practice -Arjuna asks a very pertinent question — does not a person swinging like a pendulum between the worldly and the spiritual get himself torn within? The Lord clarifies it step by step —He who follows the spiritual path does not meet with an evil destiny. If for some reason he is not able to complete his spiritual sadhana he does not get final liberation yet he attains to one of the higher worlds where lives happily as a result of his meritorious deeds. Then he has to descend to the earth where he gets his birth in the house of pious and well-off persons (where he would get a favourable atmosphere for resuming his uncompleted sadhana). Or such a person may take birth in the family of an enlightened Yogi though it is generally rare. Having got such a

birth and finding the atmosphere suitable for the pursuit of his sadhana, he now impelled by the spiritual practices of previous birth, becomes equanimous, overcomes the desire to achieve the fruits of his actions because the lessons learnt are really spiritual.

— Shlokas 38,40,41,42,43,44,45

Thoughts at the Time of Death

The thoughts that are in the mind of the dying man decide the nature of his next birth. If he is contemplating on God, he gets liberation. Whatever object one is thinking about at the time of death is what he attains after death. It is that predominant thought that determines his destiny of future life. Therefore, all the time one's karma must be done and thoughts must be fixed on the Cosmic. He whose mind is so fixed gets liberation. Therefore, a yogic practice which is done through the breath control, concentrates on the spot between the eyebrows at the time of death and devotes himself to God with unwavering mind, leads one to liberation. Great persons who reach that high

stage of liberation are not reborn in this world which after all is full of sorrow and is only transitory. It must be remembered that even the Higher Worlds spoken of appear and disappear. But he who concentrates on Him there is no rebirth. The Path of a Yogi and time of his departure from this world are two important factors to be known. In uttarayana (when the Sun moves between Capricorn and Cancer, Januaiy to July) during day time and in the bright lunar half if the yogi leaves his body in a yogic state, he attains. The opposite of this is when-a Yogi leaves his body in a yogic state in the dakshinayana (when the Sun travels from Cancer to Capricorn) in the dark lunar fortnight, he takes a rebirth. (This is only a symbolic explanation. Yogis interpret it differently.)

— Shlokas 5, 6, 7, 8, 9, 10,15,16,23,24,25

From Valmiki Ramayana

See Similar instance from the Valmiki Ramayana. In all scriptures, these thoughts are repeated, with sublimity. Bharat the noble younger brother of Lord Rama had come to persuade him to come back and accept the kingdom of Ayodhya and become the king. During his conversation with Rama he remarked.

अन्तकाले हि भूतानि मुह्यन्तीति इति पुरा श्रुतिः।
राज्ञैव कुर्वतो लोके प्रत्यक्ष सो श्रुतिः कृता।।

Antakale hi bhootani muhyanteeti pura shrutih
Ragnaiva kurvata Coke pratyaksha so shrutih kritah

It is said that when nearing death, men get deluded, they lose their intelligence. By taking such a harsh decision (asking Rama to forsake the kingdom and go to the forest) King Dasharatha has proven the truth of this. "You are yourself in a miserable condition. Why are you pitying another person in a miserable condition. Living in a human frame which is like a bubble of water, how miserable one is in his judgement of another person?"

Valmiki Ramayana; pg. 730

यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महार्णवे।
समेत्यु तु व्यपेयातां कालमासाद्य कंचन।।
एवं भार्याश्च ज्ञातश्च वसूनि चः।
समत्य व्यवधावन्ति ध्रुवो ह्येषां विनाभवः।।

Yatha kastham cha kastham cha
samayetam maharnave, Sametya to
vyapeyaatam kaalmasadhya kanchan
Evam Bharyasch putrasch gyaatayascha
vasuunicha Sametya vyavadhavanti
dhruvo hyesham vinabhava

Wife, son, family and wealth are got and lost just as two logs flowing in an ocean join together and then drift apart because such separation is inevitable.

— Valmiki Ramayana; pg. 459

Quotations from the Mahabharata

1. The person who grieves for the dead can neither die nor join the dead. When such is the natural condition of the world,

why grieve at all? The Lord of Time drags everyone to such an end. TIME has no favourites nor does He hate anyone.

– Pg. 4377; 21 sh.

2. We have been born a thousand times and have experienced the love of thousands of parents, women and children. But to whom do they belong now and to which of them we belong?

3. Worry springs from thousands of places. Fear too have hundreds of reasons. They influence the dull-witted, not the wise one.

4. Man should overcome his mental worries through his own intelligence and physical ailments through medicines... this is the power of science. How can man do it ?

The answer given by Vidura is

—A wise person should practise only what frees him from the duality of happiness and unhappiness... what difference can you see in terms of greatness, fame or achievements when you see dead bodies all of which look alike? The body is compared to a house which gets destroyed. What is immortal is the soul... Man lives and does not live in this world according to the karmas of his past life. When such is the natural condition of the world, why worry?

The wise who becomes sattwick, wishes well of others, understands the arrival and departure of mortals as being regulated by the laws of Karma, attains to the state of liberation.

Nature of the World

Therefore, to understand who alone can attain to the state of liberation, Vidura explains to Dhristratra the nature of the world we live by narrating first a story and its symbo'asm.

The Story

A Brahmin was travelling through a vast forest full of carnivorous and violent animals. The roaring lions, ferocious wolves, huge elephants and bears had turned the forest into a place full of terror. Carnivorous birds flew from place to place. Terribly disturbed, the Brahmin developed all types of fears. He tried to run away from them all but they would not stop chasing him. In the meantime he found himself being hugged and trapped by a ferocious woman. There was a well in the forest covered with grass and twigs of trees. He fell into it but the vines and creepers in the well prevented him from falling into the pit of the well. He fell upside down, with his legs upwards and the mouth downard. There he noticed another big danger. Down below in the pit was a **huge cobra. Outside along the boundary of the well, he saw a huge elephant with six mouths. The elephant was white and walked with twelve feet.** The creepers in which the Brahmin had got entangled was **full of honey bees** who were drinking the honey oozing from beehives.

Hanging upside down, the Brahmin started tasting that honey even in that condition. So agonized though he was, yet his appetite for the oozing honey was not getting whetted. He had no sense of detachment even from his pitiable and fear producing condition. The keen desire to be alive and continue drinking that honey had become an obsession with him.

The creepers by which he was hanging was being gnawed by mice, yet his desire to enjoy drinking honey was not leaving him. The fears which were haunting him were six.

First, the fear of dangerous snakes in that forest; second, the terrible woman awaiting for him in the boundary of the forest; third, the dangerous cobra down below in the pit of the forest; fourth, the huge elephant along the boundary wall of the well: fifth, the fear of the creepers by which he was hanging being torn asunder by the mice cutting it off which could have made him fall down and finally, the sixth fear was, the honey bees could have stung him.

Vidura explains the symbolism to Dhritharastra first by telling him that it was only an instance to show that without a sense of detachment one could not attain liberation.

Symbols	Meaning
FOREST	The huge forest is the world we are born into and in which we live.
SNAKES	The snakes are the various ailments we get.
WOMAN	The woman represents all that enervates our energy and brings us nearer to senility and a step nearer to death.
WELL	The well is the human body.
CREEPER	The creepers in the well are the desires and hopes man clings all through his life.
COBRA	The cobra down below is Time representing the end of life's journey.
ELEPHANT	The elephant with six mouths is the year which are the six seasons. His twelve legs are the twelve months.
MICE	The mice cutting off the creepers are day and night which reduce the span of our lives and drag us nearer to the point of our physical end.
BEES	The bees are man's manifold desires.
HONEY	The honey oozing from the beehive is the nest of human desires.

The wise who know this to be the world and its ways develops detachment and develops a keen desire to attain salvation.

दुनिया में बाबा के नाम का डंका..

परम पूज्य गुरुमहाराज जी की शिक्षाएं उनको मानने वालों के जरिए आज सम्पूर्ण संसार को प्रकाशित एवं आकर्षित कर रही हैं। धर्म की इस ध्वजा को सम्पूर्ण संसार में फहराने का श्रेय पूज्य गुरुदेव स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज को जाता है। इस दिव्यधाम की स्थापना उनके पूर्ववर्ती आचार्य स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज ने जनकल्याण के लिए की थी। आज इस केंद्र पर पीठासीन अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने यहां की खुशबू से संसार को परिचित कराया है। उनके संपर्क में आने वाले संसार भर के भक्त अपने संपर्कों से यहां की प्रशंसा करते हैं। जो यहां एक बार आ जाता है वह यहीं का हो जाता है। श्री गुरु महाराज जी के शुभाशीर्वाद से आज भारत के साथ-साथ दुनिया के करीब दो दर्जन देशों से भक्त यहां आते हैं। इनमें संयुक्त अरब अमीरात के दुबई, नाइजीरिया के लागोस व कानो, दक्षिण अफ्रीका के डरबन व जोहानिसबर्ग, हांगकांग, स्पेन में टेनेरिफ व एलिकांटे, न्यूजीलैंड में लिंकन व क्राइस्ट चर्च आदि जगहों के नाम भी सम्मिलित हैं।

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) के बारे में...

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) की दिव्यता अनिर्वचनीय, अद्भुत एवं कल्पना से परे है। हमारे वैकुंठवासी गुरु महाराज स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज कहते थे कि यह पवित्र स्थान दिव्य महासागर के मंथन से प्रकट हुई दिव्य गौ कामधेनु के समान हीहै। यहां केवल भाव की आवश्यकता है। इस दिव्यधाम पर विश्वास रखो, यह आपको ऐसे परिपूर्ण करता है जैसे मां अन्नपूर्णा सभी को पौष्टिकता से परिपूर्ण भोजन प्रदान कर तृप्त करती हैं।

हम अनेक व्यक्तियों के अनुभवों के आधार पर यह कह सकते हैं कि कल्पवृक्ष रूपी श्री सिद्धदाता आश्रम में आने वाला कभी खाली हाथ नहीं जाता है।

श्री सिद्धदाता आश्रम के लिए स्थान के चयन के साथ भी एक चमत्कारिक घटना जुड़ी है। एक बार जब श्री गुरु महाराज जी सूरजकुंड बड़खल मार्ग से कहीं जा रहे थे, तब उन्होंने यहां पानी का एक स्रोत देखा। उसी रात, उनके ईष्ट देव ने आदेश दिया कि जहां पानी का स्रोत देखा था, वहीं मेरा स्थान बनाओ। इस आदेश को शिरोधार्य कर श्री गुरु महाराज जी ने वर्ष 1989 में फरीदाबाद की अरावली पर्वत श्रृंखला अंतर्गत व्यास पहाड़ी पर श्री सिद्धदाता आश्रम की नींव रखी।

अरावली पर्वत माला का यह हिस्सा ऐतिहासिक एवं पौराणिक रूप से आध्यात्मिक और धार्मिक गतिविधियों के लिए जाना जाता है।

इस स्थान का नाम प्राचीन काल में ऋषि परशुराम, ऋषि व्यास और ऋषि पाराशर सहित पांडवों और उनकी मां कुंती के साथ भी जुड़ता रहा है। दिव्य आदेश के तहत निर्मित आश्रम परिसर में वर्ष 1996 की विजयादशमी (दशहरा) के दिन श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम का निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया। श्री गुरु महाराज जी के अथक प्रयासों और भक्तों की सेवा से चार साल की अल्प अवधि में ही मंदिर के बुनियादी ढांचे और भवन का अधिकांश निर्माण संपन्न हो गया। हालांकि इस भव्य दिव्यधाम को और भव्यता देने एवं सौंदर्यीकरण करने में छह साल का और समय लग गया। इस प्रकार 23 अप्रैल 2007 को यह जनता के लिए खोल दिया गया। गुरु महाराज हमेशा कहते कि श्री सिद्धदाता आश्रम सिद्धों को भी देने वाला है और हम बाबा के एक एक शब्द के अनुभवी एवं साक्षी हैं।

बढ़िया स्वास्थ्य, हजार नेमतों से अच्छा

बाबा कहते हैं कि व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य का पूरी तरह से ख्याल रखना चाहिए। इस प्रकार जो व्यक्ति एक स्वस्थ जीवन जीता है, उसके अन्य कार्य भी सफल होते हैं। पीठासीन अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज कहते हैं कि व्यक्ति का बढ़िया स्वास्थ्य हजार नेमतों से अच्छा है। एक स्वस्थ व्यक्ति ही धर्म का आचरण अच्छी तरह से निबाह सकता है। आश्रम परिसर में एक निशुल्क डिस्पेंसरी का संचालन और समय समय पर अनेक स्वास्थ्य जांच शिविरों, मोतियाबिंद शिविरों आदि का आयोजन किया जाता है।

संस्कृत द्वारा संस्कृति का प्रसार

गुरू महाराज के निर्देशानुसार स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद-वेदांग संस्कृत महाविद्यालय का संचालन श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में किया जाता है। जिसमें रहने वाले छात्रों को निःशुल्क आवास और बोर्डिंग के साथ पूर्णतः निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। इस महाविद्यालय का केंद्र वैदिक ग्रंथों, पुराण, साहित्य, व्याकरण, कर्मकांड (अनुष्ठान प्रथा), ज्योतिष और धर्मशास्त्र आदि विषय हैं। वहीं हिंदी, अंग्रेजी, गणित, कंप्यूटर एवं विज्ञान की जानकारी भी दी जाती है। वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने उपरोक्त महाविद्यालय को शास्त्री स्तर तक मान्यता प्रदान की। इस प्रकार श्री गुरु महाराज स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी के निर्देशानुसार संस्कृत द्वारा संस्कृति के प्रसार पर कार्य किया जा रहा है। इसी प्रकार आश्रम परिसर में ही स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत विद्यालय का भी संचालन किया जाता है। जिसमें सप्त वर्षीय वेद का पाठ्यक्रम मुख्य गतिविधि है। यहां रहने वाले छात्र न केवल शिक्षण व अन्य सांस्कृतिक, खेल व अन्य गतिविधियों में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं।

पुस्तक से बड़ा कोई मित्र नहीं

बड़े ज्ञानियों द्वारा निरखी बात है कि पुस्तक से बड़ा कोई मित्र नहीं होता है। यही बात यहां दिव्यधाम परिसर में चरितार्थ होती नजर आती है। जहां परम कृपालु श्रीमद् जगद्गुरु स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने स्वामी सुदर्शनाचार्य पुस्तकालय की स्थापना की, जिसमें सभी प्रमुख संप्रदायों के आध्यात्मिक ग्रंथ, पुराण सहित सकल धार्मिक ज्ञान से ओतप्रोत पुस्तकों को संकलित किया गया है। इस पुस्तकालय में करीब 12,000 से अधिक शीर्षक उपलब्ध हैं। जिनमें वैदिक विषयक ग्रंथ, भारतीय दर्शन, वेद, पुराण और उपनिषदों आदि संकलित हैं। पुस्तकालय में न केवल वैष्णव धर्म से संबंधित ग्रंथों, बल्कि शैव और साक्त दर्शन सहित अन्य मतों एवं संतों के ज्ञान को प्रदान करने वाली पुस्तकों को भी संकलित किया गया है।

अन्नपूर्णा का कृपा भण्डार

श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में एक बड़ी रसोईघर है, जिसे मां अन्नपूर्णा रसोई भी कहा जाता है। इस रसोई में प्रतिदिन आश्रम में आने वाले भक्तों के लिए भोजन प्रसादम तैयार होता है। यहां आने वाला कोई भक्त भूखा या प्यासा वापिस नहीं जाता। यह रसोई सभी को महाप्रसाद प्रदान करती है। श्री गुरु महाराज की कृपा और उदारता से अन्नपूर्णा रसोई का प्रसाद पाकर भक्त का जीवन पोषित होने लगता है। इस रसोई में रोजाना हजारों की संख्या में भक्तों को भोजन प्रसाद वितरित किया जाता है। यह रसोई अपने आप में समता का एक बड़ा उदाहरण प्रस्तुत करती है क्योकि यहां समस्त भक्त एक पंक्ति में एक साथ बैठकर प्रसाद प्राप्त करते हैं।

सुदर्शन स्मृति
SUDARSHANSMRITI

आस्था का प्रमुख केंद्र : स्मृति स्थल

श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में प्रवेश के पूर्व बाएं तरफ वैकुंठवासी गुरु महाराज का समाधि स्थल भी भक्तों की आस्था का विशेष केंद्र है। यहां पर आने वाले भक्त समाधि पर माथा टेकना नहीं भूलते। यहां पर बाबा की याद में एक सुंदर संयोजित संग्रहालय भी स्थापित किया गया है। जिसमें बाबा के शारीरिक जीवन में प्रयोग वस्तुओं को दर्शनार्थ रखा गया है। यहां सुंदर फल और फूल देने वाले पेड़ लगाए गए हैं। जिससे यहां की सुवास विशिष्ट लगती है। यहां प्राकृतिक वातावरण में बाबा की मनोरम छवियां मन में बनती हैं। जिनसे भक्त गण विस्मित हुए बिना नहीं रह सकते हैं।

TREE PLANTATION
GNAL BN CRPF, NEW DELHI

जनकल्याणकारी गतिविधियां

अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के निर्देशन एवं उनकी ही कृपा से सेवाभावी भक्त अनेक सेवा प्रकल्पों को संपन्न करते हैं। गत वर्ष इन सेवा प्रकल्पों में पौधारोपण, जरूरतमंदों को कंबल, शॉल आदि का वितरण, साफ-सफाई अभियान, जरूरतमंदों को भोजन आदि का वितरण आदि ऐसे अनेक सेवा प्रकल्प हैं। इस कोरोना काल में तो आश्रम द्वारा जरूरतमंद लोगों को भोजन के लाखों पैकेट्स प्रदान किए गए। जिनकी भूरि भूरि प्रशंसा शासन एवं प्रशासन द्वारा भी की गई। वहीं लाभांवितों ने आश्रम के इस कार्य की बड़ी प्रशंसा की।

श्रीमते रामानुजाय नमः
श्री गुरवे नमः
श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम
सुस्वागतम्

कोरोना काल में लाखों को कराया भोजन

इस कोरोना काल में आश्रम के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के निर्देशन में प्रतिदिन भोजन के पैकेट्स बंटवाए जिससे लाखों की संख्या में लोग लाभान्वित हुए। इसके अलावा आश्रम की ओर से पीएम रिलीफ फंड और सीएम हरियाणा रिलीफ फंड की सहायतार्थ लाखों रुपयों की राशि प्रदान की गई। शासन एवं प्रशासन द्वारा श्री गुरु महाराज जी के इस कदम की बड़ी प्रशंसा की गई।

गौधन की सेवा

श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया जाता है जिसे श्री नारायण गौशाला का नाम दिया गया है। यहां 300 से अधिक गौधन है। श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज सभी जीवों के प्रति दया से परिपूर्ण हैं। उनका विशेष ध्यान इस गौशाला की ओर रहता है। वह नारायण गौशाला का संरक्षण एवं संवर्धन अपने बच्चों के जैसे ही कर रहे हैं। वह निरंतर गोशाला के दैनिक कामकाज में गहरी रूचि रखते हैं। गौशाला से प्राप्त समस्त द्रव्य का उपयोग आश्रम में ही किया जाता है और इसका किसी प्रकार का वाणिज्यिक प्रयोग नहीं किया जाता है। वह कहते हैं कि गौ में समस्त देवताओं का वास है, इसलिए हमें गौधन की सेवा अवश्य ही करनी चाहिए।

कलियुग केवल नाम आधारा

श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के शब्दों में, गुरू से प्राप्त नाम संसार के समस्त कष्टों से बचने की रामबाण औषधि है। इस कलियुग में भगवान के नाम को जपने वालों को अनेक कष्ट छू भी नहीं सकेंगे। ऐसा माना जाता है कि इस युग में मन के किए पाप नहीं सताते, वहीं भगवान के नाम का जप निरंतर करने वाले व्यक्ति से मन के पाप भी नहीं होते हैं। अतः यह नाम बड़ा ही कल्याणकारी है। जिसे गुरुदेव वैदिक विधि द्वारा अपने शिष्यों को देते हैं। आश्रम की ओर से लगभग हर महीने सैकड़ों भक्तों को नामदान की व्यवस्था की जाती है। यह नामदान गुरुदेव भक्तों को तप्त चक्रांकन के माध्यम से शंख एवं चक्र लगाकर देते हैं। इस विधि में हवन, यज्ञोपवीत व शरणागति महत्वपूर्ण अंग हैं। बाबा स्वयं भक्तों के कान में नाम देकर उनकी मुक्ति की राह सरल बनाते हैं।

नवीकरणीय ऊर्जा की ओर आश्रम का बड़ा कदम

सभी जानते हैं कि ऊर्जा के सीमित स्रोतों के बीच दुनिया की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। जिससे नए ऊर्जा स्रोतों को ढूंढना और उनका उपयोग बेहद आवश्यक है। इसी दिशा में श्री गुरु महाराज के निर्देश पर श्री सिद्धदाता आश्रम में सौर ऊर्जा प्लांट लगाया गया है। जो आश्रम की ऊर्जा का बहुत बड़े हिस्से की पूर्ति कर पाने में सक्षम है। शासन प्रशासन की ओर से बड़े संस्थानों से इस बारे में निरंतर अपील की जा रही हैं लेकिन यह कार्य बहुत धीमी गति से चल रहा है। वहीं आश्रम ने अपनी ओर से सौर ऊर्जा प्लांट लगाकर बड़ी पहल की है। जिससे अनेक लोग प्रभावित होकर अनुसरण कर सकते हैं। श्री गुरु महाराज कहते हैं कि हमें शब्द भी सोच समझकर प्रयोग करने चाहिए, यह तो ऊर्जा है। ऊर्जा को उत्पन्न नहीं किया जा सकता है, इसे केवल एक तरह से दूसरी तरह में परिवर्तित किया जा सकता है। इसलिए ऊर्जा का सोच समझकर ही प्रयोग करना चाहिए।

श्री सिद्धदाता आश्रम में लगाये गये सौर उर्जा प्लांट का रिबन काटकर शुभारंभ करते पूज्य गूरुदेव जी व अन्य।

श्री सिद्धदाता आश्रम में लगाये गये सौर उर्जा प्लांट का विहंगम दृश्य।

04 आज समाज
नई दिल्ली, शनिवार, 23 मई 2020

सादगी से मनाई श्री सिद्धदाता आश्रम के संस्थापक स्वामी की पुण्यतिथि

■ लाखों भक्तों के आराध्य गुरु महाराज की पुण्यतिथि पर पहली बार नहीं हुआ बड़ा कार्यक्रम

आज समाज नेटवर्क

फरीदाबाद

बच्चों की तरह करें पौधों की देखभाल : स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य

कर्तापन का भाव अहंकार लाता है : स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य

बड़े मददगार की भूमिका

फरीदाबाद केसरी
बुधवार WEDNESDAY 8 अप्रैल 2020

एसडीएम के कहने के बाद 1000 लोगों को भोजन दिया जा रहा

■ श्री सिद्धदाता आश्रम के सहायता कार्यों से प्रशासन प्रसन्न

जागरण सिटी

अभिषेक के साथ पांच दिवसीय ब्रह्मोत्सव संपन्न

विराट वैभव

घटस्थापना के साथ ही सिद्धदाता आश्रम में नवरात्र प्रारंभ

फरीदाबाद केसरी

श्री सिद्धदाता आश्रम ने सिविल अस्पताल को दिए 200 कंबल

सामाजिक दायित्व निभाते हुए पहले भी मिलकर करते रहे हैं प्रोजेक्ट

फरीदाबाद केसरी
सोमवार MONDAY 17 अगस्त 2020

स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय में मना स्वतंत्रता दिवस

पीएम और सीएम फंड में सिद्धदाता आश्रम ने दिए तीन लाख रुपए का चेक

■ मुख्यमंत्री मनोहर लाल के राजनैतिक सलाहकार अजय गौड़ को सौंपे चेक

आज समाज नेटवर्क

...में कर्म कर्तव्य सिखाती है भगवान की लीलाएं : स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य

'पौधे लगाने से ज्यादा महत्वपूर्ण उनकी बच्चों की तरह उचित देख...

विधायक सीमा त्रिखा ने सिद्धदाता आश्रम की भोजन सेवा में की भागीदारी

भोजन बनाने और बांटने की व्यवस्था को देख की प्रशंसा

फरीदाबाद केसरी
THURSDAY, 2 JAN 2020

'सुख और दुख अपने कर्मों से ही होते हैं प्राप्त'

जागरण सिटी फरीदाबाद

राम मंदिर निर्माण के लिए भूमि पूजन को लेकर खूब दिख रहा उत्साह

फरीदाबाद

पुरुषोत्तमाचार्य महाराज ने किया दुग्धाभिषेक

...जी की प्रथम पुण्यतिथि पर लगाए जीवनदायी पौधे

अपने शिष्य के दाग धोकर निर्मल बना देते हैं गुरु : स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य

फरीदाबाद केसरी
शुक्रवार FRIDAY 18 सितम्बर 2020

...विश्वकर्मा जयंती पर श्री सिद्धदाता आश्रम में पूजन

जगद्गुरु स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी ने किया सविधि पूजन

श्री सिद्धदाता आश्रम में धूमधाम से मनाई रामानुज स्वामी की जयंती

■ श्री वैष्णव परंपरा के ...उद्धारक माने जाते ...हैं रामानुज

ग्रेटर फरीदाबाद-पलवल केसरी

किए हुए कर्म तो काटने पड़ेंगे, गुरु की युक्ति से जीवन सरल हो जाता है : पुरुषोत्तमाचार्य

भूमिका निभा रहे धार्मिक संगठन

दिल्ली-हरियाणा पीठाधीश्वर जगद्गुरु का सरपंचों-ग्रामीणों ने किया स्वागत

सिद्धदाता आश्रम के अधिष्ठाता स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य ने किया पौधरोपण

हरियाणवी फिल्म कलाकार ने ग्रामीणों के साथ किया पौधरोपण

श्री सिद्धदाता आश्रम में सरकार के निर्देशों के अंतर्गत मना दशहरा

फरीदाबाद केसरी

भगवान लक्ष्मी नारायण के अभिषेक के साथ ब्रह्मोत्सव संपन्न

जागरण सिटी

...न को बांधा लोक ...ण के लिए रक्षा सूत्र

पर्यावरण दिवस पर पौधरोपण कर दिया सुरक्षा का संदेश

करुणा जन कल्याण

जागरण सिटी फरीदाबाद

जरूरतमंदों को वितरित किया भोजन

सिद्धदाता आश्रम में हरियाणा रेडक्रॉस समिति की उपाध्यक्ष सुषमा गुप्ता जरूरतमंदों को पैक बंद भोजन वितरित करती हुई, साथ में आश्रम के मठाधीश स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य महाराज • फोटो सौजन्य आश्रम प्रबंधन

केसरी

...हत्वपूर्ण है, ...त देखभाल'

जागरण सिटी फरीदाबाद

दिव्यधाम में षोडश विधि से मनाई नृसिंह जयंती

अमर उजाला फरीदाबाद

स्वामी सुदर्शनाचार्य महाराज की पुण्यतिथि

हिन्दुस्तान फरीदाबाद LIVE

श्रद्धालुओं ने स्वामी रामानुजाचार्य की जयंती मनाई

आज समाज

पहल

'पौधे लगाने से ज्यादा महत्वपूर्ण है, उनकी बच्चों की तरह देखभाल'

सिद्धदाता आश्रम में पौधरोपण

पौधरोपण करते भाजपा जिलाध्यक्ष गोपाल शर्मा और स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज।

हिन्दुस्तान

सिद्धदाता आश्रम में विदेशी नागरिकों ने आशीर्वाद लिया

...नाथ महादेव का किया गया अभिषेक

हिन्दुस्तान फरीदाबाद LIVE

नवरात्र के चौथे दिन मां कूष्मांडा की पूजा-अर्चना

जागरण सिटी

श्री सिद्धदाता आश्रम में मनाई जन्माष्टमी

नववर्ष के मनाने सिद्धदाता आश्रम पहुंचेंगे भक्त

अमर उजाला

विश्वकर्मा जयंती पर सिद्धदाता आश्रम में किया गया पूजन

अमर उजाला फरीदाबाद

नई दिल्ली | गुरुवार, 14 अगस्त 2020

श्रीसिद्धदाता आश्रम में मनाई जन्माष्टमी

आज समाज

नई दिल्ली, सोमवार, 23 जुलाई 2020

भक्तों ने लाइव देखा महादेव का अभिषेक

गुरु दर्शन को पहुंचे विशिष्ट भक्तजन

श्री वैष्णव परंपरा के श्री रामानुज संप्रदाय की ख्याति का केंद्र बन चुके हरियाणा के फरीदाबाद स्थित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में वर्ष पर्यंत अति विशिष्ट अतिथियों का निरंतर आवागमन बना रहता है। वह अनंतश्री विभूषित श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के साथ धर्म, दर्शन, समाज पर चर्चाएं करते हैं वहीं अपने जीवन के अनसुलझे पहलुओं को भी सुलझाते हैं। परम पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि हमें आश्रम में आने वाले अपने मेहमानों का ऐसे दिल खोलकर स्वागत करना चाहिए जैसे कि हम अपने घर आने वाले मेहमानों का स्वागत करते हैं। वह कहते हैं कि हम जब अपने महमानों का मन से स्वागत करते हैं तो दोनों पक्ष प्रसन्न होते हैं और दोनों के ही जीवन में समृद्धि आती है और सबसे बड़ी बात यह है कि मानव के लिए इन मानवीय गुणों की बड़ी आवश्यकता भी है।

हरियाणा के पूर्व शिक्षा मंत्री श्री रामबिलास शर्मा जी श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद लेते हुये।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद लेते हुये हरियाणा के मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार श्री अजय गौड़ जी

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद लेते हुये एसडीएम बड़खल श्री पंकज सेतिया जी व अन्य।

पूज्य गुरुदेव संग श्री के. सी. पाण्डेय (गर्गोटी-खनिज संग्रहालय के सीएमडी, राकेश शुक्ला जी (आईएएस), श्री आशुतोश त्रिपाठी जी (पीसीएस), श्री योगेश्वर राम जी, श्री वेद प्रकाश शुक्ला जी व अन्य।

पूज्य गुरुदेव संग श्री के. सी. पाण्डेय (गर्गोटी-खनिज संग्रहालय के सीएमडी) व श्री सौरभ त्रिपाठी जी।

श्री गुरु महाराज संग श्री वेद प्रकाश शुक्ला जी (आईआरएस), योगेश्वर राम मिश्रा जी (आईएएस) व देवानंद त्रिपाठी जी।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद लेता त्रिपाठी परिवार, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)।

पूज्य गुरुदेव संग श्री श्री राकेश ओझा (आईएएस) जी व अन्य।

श्री गुरु महाराज जी से परिवार सहित आशीर्वाद लेते भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री संदीप जोशी जी।

श्री गुरु महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये हरियाणा के खनन एवं परिवहन मंत्री पंडित श्री मूलचंद शर्मा जी व अन्य।

पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये श्री अक्षत कौशल जी (आईपीएस) व श्रीमति अंकिता मिक्षा (आईएएस)

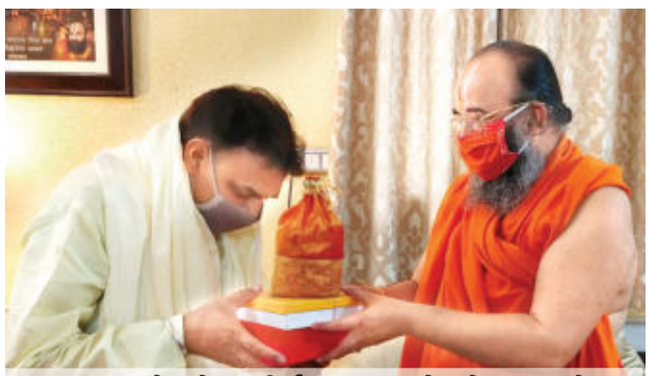

पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये भाजपा के फरीदाबाद जिलाध्यक्ष श्री गोपाल शर्मा जी।

पूज्य गुरुदेव से सहपत्नी आशीर्वाद प्राप्त करते हुये कमांडेंट सीआरपीएफ श्री जयदेव केसरी जी।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये श्री कुणाल वर्मा जी (एडिटर हिंदुस्तान)

पूर्व कांग्रेस विधायक ललित नागर जी श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

श्री गुरू महाराज जी से आशीर्वाद लेते हुये पूर्व सांसद श्री अवतार भड़ाना जी की पत्नी श्रीमती ममता भड़ाना जी।

श्री गुरू महाराज संग हरियाणा के मुयमंत्री के ओएसडी श्री भूपेश दयाल जी सहपरिवार।

श्री गुरु महाराज संग फरीदाबाद के डीसीपी (एनआईटी) श्री अर्पित जैन जी।

श्री गुरु महाराज संग ओएसडी लोकसभा श्री मनोज कुमार अरोड़ा जी।

भारत सरकार में एडिशनल सेक्रेटरी श्री संजय गर्ग जी धर्मपत्नी संग श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद लेते हुये।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद लेने पहुंचे योग गुरु बाबा रामदेव के शिष्य श्री कृष्णवीर शर्मा जी व अन्य।

पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये श्री मुकेश शास्त्री जी व साथ में भाजपा नेता किशन ठाकुर।

पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये कांग्रेस विधायक पंडित श्री नीरज शर्मा जी।

श्री गुरु महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये वरिष्ठ पत्रकार श्री राजकुमार भारद्वाज जी।

श्री गुरु महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करती हुई हरियाणा रैडक्रॉस सोसाईटी की उपाध्यक्ष श्रीमती सुषमा गुता जी।

श्री गुरु महाराज जी को सम्मानित करते हुये राजस्थान के गांव पांडला से आये ग्रामीण।

श्री गुरु महाराज संग भाजपा विधायिका श्रीमती सीमा त्रिखा जी व उनके पति एडवोकेट श्री अश्वनी त्रिखा जी।

पूज्य गुरुजी से आशीर्वाद प्राप्त करते एडिशनल सोलिसिटर जनरल ऑफ इंडिया श्री आत्माराम नड़करनी जी।

गुरु भक्त श्री रोहित सिधवानी जी अपनी धर्मपत्नी व बेटी सहित पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

पूज्य गुरुजी संग आरएसएस के अध्यक्ष विद्या भारती (हरियाणा प्रांत) श्री देव प्रसाद भारद्वाज जी व अन्य।

संत मिलन

जब तत्वदर्शी महान पुरुषों की संगति मिलती है तो परमपिता परमात्मा की याद आती है। उनकी सत्संगति से मानव जीवन में सत्संग तथा परमात्मा के नाम के महत्व का पता चलता है तथा उसे हृदय में जानने की जिज्ञासा होती है। तब वे महान पुरुष परमात्मा के नाम व स्वरूप् का बोध हृदय में करा देते हैं। बीते वर्ष श्री सिद्धदाता आश्रम व आश्रम के बाहर कार्यक्रमों में श्री गुरु महाराज जी की कई सन्त-महात्माओं से भेंट व धर्म चर्चा हुई।

योगगुरु बाबा रामदेव जी से शिष्टाचार भेंट करते पूज्य गुरुदेव जगदगुरु स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज।

गुरु महाराज संग संत हनुमान दास जी महाराज।

पूज्य गुरुजी से मिलने आश्रम पहुंचे श्री श्री 108 तपोनष्ठि अग्निहोत्री श्री महन्त सम्पूर्णानन्द ब्रह्मचारी जी।

गुरु महाराज जी संग स्वामी श्री रावतपुरा सरकार (म.प्र.)

पूज्य गुरुजी से मिलने आश्रम पहुंचे जगदगुरु स्वामी धरणीधराचार्य जी महाराज (पलवल)

4

5

6

7

श्री गुरुदेव महाराज के प्रवास कार्यक्रम

सदगुरुदेव अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी उद्यमी एवं समाजसेवी श्री प्रमोद गुप्ता जी के निवास पर आयोजित माताकी चौकी में सम्मिलित हुये। 1- गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज, 2- विधायक श्री राजेश नागर, पूर्व मंत्री श्री विपुल गोयल जी आदि विशिष्ट व्यक्ति भी मौजूद रहे। 4- पूज्य गुरूदेव पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री रामबिलास शर्मा जी के महेन्द्रगढ़ निवास पर भी विशिष्ट बुलावे पर पहुंचे। 5- राजस्थान के अलवर स्थित मधुसूदन सेवा आश्रम के ब्रह्मोत्सव में सम्मिलित हुये। 6- वृन्दावन के बड़ा खटला स्थित आश्रम के ब्रह्मोत्सव में भी सम्मिलित हुये। 7- योग गुरु बाबा रामदेव के शिष्य श्री कृष्णवीर शर्मा जी के विशिष्ट बुलावे पर उनके निवास पर भी श्री गुरुदेव महाराज पहुंचे।

भंडारा सेवा
भंडारा सेवा

मंगल नववर्ष, मंगल जन्मोत्सव

हमारे परम पूज्य अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज का जन्मोत्सव एवं नववर्ष का पर्व आश्रम परिसर में बड़ी ही धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर लाखों की संख्या में भक्त यहां पहुंचे और गुरुमहाराज को अपनी शुभकामनाएं देकर आशीर्वाद प्राप्त किया। श्री गुरु महाराज जी ने भगवान श्री लक्ष्मीनारायण जी, वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी का पूजन कर नववर्ष कैलेंडर, स्मारिका और डायरी का विमोचन किया और भक्तों को प्रवचन कहे। भक्त भी भंडारा प्रसाद एवं आशीर्वाद प्राप्त कर धन्य धन्य हुए।

पूज्य गुरुदेव जी का जन्मोत्सव एवं नववर्ष उत्सव, 01 जनवरी, 2020

फूलों की होली, होली के फूल

श्री सिद्धदाता आश्रम की होली दुनियाभर में मशहूर है। यहां पर होली के आयोजन में सम्मिलित होने के लिए अनेक देशों और भारत के कोने कोने से भक्त चले आते हैं। ऐसा माना जाता है कि वृंदावन की होली के बाद श्री सिद्धदाता आश्रम की होली बड़ी संख्या में भक्तों को आकर्षित करती है। यहां पर होली का आयोजन विशिष्ट वैदिक वैष्णव अंदाज में होता है। जिसका प्रारंभ हवन के साथ स्वयं अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज करते हैं। श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में देव विग्रहों का पूजन, भजन संगीत के साथ प्रवचन एवं आशीष, भोजन प्रसादम इसके अन्य अंग हैं।

- होली 9-10 मार्च, 2020

रामजी की निकली सवारी

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्र जी महाराज के धरावतरण दिवस पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मी नारायण दिव्यधाम में विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन किया गया। हमारे परम पूज्य अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने भगवान श्रीराम जी के श्रीविग्रह का षोडशोपचार विधि से पूजन किया। इस अवसर पर वैदिक रीति से संपन्न हुई पूजा के अवसर पर बजने वाले घंटे घडियाल शंख आदि की प्रतिध्वनि से वातावरण विशिष्ट रूप से चहकने लगा और भक्त वृंद भावविभोर हो गए।

- श्री राम नवमी 02 अप्रैल, 2020

जयकारा वीर बजरंगी

हमारे परम पूज्य अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में भक्त शिरोमणि श्री हनुमान जी की जयंती विधि विधान के साथ संपन्न हुई। इस अवसर पर श्री लक्ष्मी नारायण दिव्यधाम में विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन हुआ। जिसका लाइव प्रसारण देश विदेश में स्थित लाखों भक्तों द्वारा देखा गया। श्री गुरु महाराज जी ने भक्तों को दिए आशीष वचन में हनुमानजी के बारे में बताया। उन्हें भक्त शिरोमणि बताते हुए उनसे सीखने की बात कही। उन्होंने कहा कि हनुमान जी जैसे श्रीराम जी के आदेश को मानने को तत्पर रहते थे, वैसे ही शिष्यों को गुरुवचनों को मानने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

- श्री हनुमान जयंती 08 अप्रैल, 2020

त्रयोदशम् ब्रह्मोत्सव

श्री सिद्धदाता आश्रम का पांच दिवसीय 13वां श्री ब्रह्मोत्सव (26 से 30 मई 2020) वैभव और विधि विधान के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आश्रम के अधिष्ठाता अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने सभी पुजारियों, वेद छात्रों एवं सेवादारों सम्मान स्वरूप भेंट एवं आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने कहा कि भगवान् की कैंकर्य सेवा करने वाले को अनंत एवं अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के द्वारा देश दुनिया में किया गया।

- 26 से 30 अप्रैल, 2020

भाष्यकार स्वामी जी की जय

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में श्री संप्रदाय को पुनर्स्थापित करने वाले भाष्यकार भगवान श्री रामानुज स्वामी जी की जयंती कोविड नियमों के तहत मनाई गई। इस अवसर पर श्री गुरु महाराज जी ने बताया कि रामानुज स्वामी ने धरती पर बढ़ रहे अधर्मियों को अपने ज्ञान द्वारा परास्त कर श्री वैष्णव परंपरा को पुनर्स्थापित किया। उन्हीं की परंपरा में वैकुंठवासी महाराज के तप से श्री सिद्धदाता आश्रम भी सिद्धपीठ हुआ। इस अवसर पर मंदिर के अर्चकों के सहयोग से भाष्यकार स्वामी जी के उत्सव विग्रह की शोभायात्रा निकाली गई।

- श्री रामानुज जयंती 29 अप्रैल, 2020

श्री नृसिंह भगवान की जय

धरती पर बढ़ रहे दैत्य हिरण्यकशिपु के अत्याचारों को समाप्त करने के लिए भगवान श्रीमन्नारायण ने नृसिंह अवतार लेकर हम सब पर उपकार किया। आज उनकी जयंती पर हम सभी उनसे समस्त संसार पर अपनी कृपा रखने की प्रार्थना करते हैं। यह आशीषवचन श्री सिद्धदाता आश्रम के अधिपति श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने भगवान का सविधि अभिषेक करने के उपरांत कहे। महाराजश्री श्रीनृसिंह जयंती के अवसर पर भगवान के श्रीविग्रह का सविधि अभिषेक पूजन एवं लोककल्याण के लिए प्रार्थना की।

- श्री नृसिंह जयंती 06 मई, 2020

बाबा! बहुत याद आते हो

श्री सिद्धदाता आश्रम के संस्थापक वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर देश विदेश के भक्तों का आश्रम में आना होता है। लेकिन इस बार कोरोना काल के कारण भक्तों को कार्यक्रम का लाइव टेलिकास्ट ही दिखाया गया। वहीं अधिष्ठाता अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगद्गुरु रममानुनाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में वैकुंठवासी गुरु महाराज जी के वचनों को याद किया गया।

वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की पुण्यतिथि, 22 मई, 2020

बाबा, तेरी जय-जयकार

श्री सिद्धदाता आश्रम के स्थापना दिवस एवं संस्थापक स्वामी सुदर्शनाचार्य जी की जयंती को आनंदोत्सव के रूप में हर वर्ष मनाया जाता है। इस बार भी पूरे उत्साह के साथ गुरु महाराज की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर अधिष्ठाता अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में वैकुंठवासी बाबा के विग्रह एवं समस्त आश्रम परिसर को सजाया गया। वैकुंठवासी बाबा की पादुकाओं का अभिषेक किया गया और उनकी पालकी यात्रा निकाली गई।

वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की जयंती (आनंदोत्सव), 27 मई, 2020

गुरु कुम्हार, शिष्य कुंभ है

एक शिष्य के जीवन में गुरु पूर्णिमा का महत्व सर्वोपरि होता है। इस बार श्री सिद्धदाता आश्रम में श्री गुरु पूर्णिमा उत्सव के अवसर पर अधिपति श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने गुरु पादुकाओं का पूजन करने के बाद बताया कि गुरु कुम्हार के जैसे हैं। जो चोट तो देंगे लेकिन अंदर से सहारा भी देंगे। उन्होंने सभी से इस कोरोना काल में खुद का ख्याल रखकर संसार की देखभाल करने का संदेश दिया। इस कार्यक्रम का देश विदेश में रहने वाले लाखों भक्तों ने सोशल मीडिया प्लेट फॉर्म के जरिए लाइव प्रसारण देखा।

श्री गुरु पूर्णिमा, 05 जुलाई, 2020

स्व. श्रीमति अशर्फी देवी
(31 मार्च 1936 - 07 अगस्त 2019)

श्री गुरुमाताजी की प्रथम पुण्यतिथि

वैकुंठवासी गुरु महाराज जी की भार्या, आश्रम के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज जी की माता जी एवं हम सभी गुरु भक्तों की गुरुमाता श्रीमती अशरफी देवी जी की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर श्री सिद्धदाता आश्रम के सत्संग भवन में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री गुरु महाराज जी एवं अन्य ने श्रीगुरुमाता जी के बारे में अपने विचार रखे और श्रद्धासुमन अर्पित किए।

07 अगस्त, 2020

लगे बोल बम के जयघोष

श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में स्थित श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम में श्रावण शिवरात्रि का पर्व बड़े हषोल्लास से मनाया गया। आश्रम के अधिपति श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने वैदिक विधि विधान से भगवान शिव के मूर्त रुप का महाभिषेक किया। उन्होंने देवाधिदेव महादेव भगवान शिव पर गंगा जल चढ़ाकर पूजा व प्रार्थना की। श्री शिव भोले के इस अभिषेक का लाइव प्रसारण लाखों ने देखा। इसके पश्चात सभी ने श्री गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में शीश झुकाकर नमन करते हुए आशीर्वाद लिया और भोजन प्रसाद प्राप्त किया।

श्रावण शिवरात्रि, 19 जुलाई, 2020

नन्द के आनन्द भयो, जय कन्हैया लाल की

श्री रामानुज संप्रदाय के तीर्थ क्षेत्र श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर अद्भुत रोशनी रही। यहां आश्रम के अधिपति श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने भगवान के श्रीकृष्ण अवतार के अवतरण की वैदिक परंपरा निभाई और भक्तों को अपना संदेश दिया। उन्होंने बताया कि जब जब धरती पर पापियों के अत्याचार अधिक बढ़ जाते हैं, तब तब इस धरती पर भगवान का अवतरण होता है और वह अपने भक्तों के कष्टों को हर लेते हैं। उन्होंने लाइव जुड़े असंख्य भक्तों को भी आशीर्वाद दिया। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव, 12 अगस्त, 2020

71वें
गणतंत्र दिवस

नवरात्र एवं विजयादशमी

माता रानी के नवरात्रे/ श्रीरामनवमी और विजय दशमी के उपलक्ष्य में श्री सिद्धदाता आश्रम में विशिष्ट पूजन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम आश्रम के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने हवन किया। उन्होंने भगवान श्रीमन्नारायण, आद्यालक्ष्मी से लोककल्याण के लिए प्रार्थना की। इससे पूर्व नौ दिन तक यहां अनुष्ठान का आयोजन किया गया। जिसमें पुण्यात्माओं ने आश्रम में रहकर ही अपने अपने मंत्रों का अनुष्ठान किया।

दशहरा पर्व, 25 अक्टूबर, 2020

दान दिए न धन घटे

हर वर्ष की भांति दीपावली से पूर्व श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में भगवान् श्रीमन्नारायण एवं श्री गुरुदेव के श्रीचरणों में सेवारत विभिन्न सेवादारों एवं कारसेवकों को आश्रम के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने आशीर्वाद एवं उपहार स्वरूप मिठाई, वस्त्र प्रदान किए।

दीपमालिकाओं से समृद्धि का स्वागत

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम, श्री सिद्धदाता आश्रम में दीपावली का पर्व बड़े हर्षोउल्लास एवं विधि विधान से मनाया गया। जहां एक ओर पूरे आश्रम परिसर को 5100 दीपों की दीपमालिका प्रज्ज्वलित कर सजाया गया वहीं दूसरी ओर श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम रंगीन लाइटों की सुन्दर रोशनी से जगमगा उठा। संध्या समय श्री गुरु महाराज ने लोक कल्याण के लिए वैदिक परम्परा अनुसार देवी माँ श्री लक्ष्मी व श्री गणेश भगवान् का सविधि पूजन किया। इस अवसर पर लाखों भक्तों ने समस्त आनन्द का सोशल मीडिया माध्यमों के जरिए लाइव आनन्द प्राप्त किया।

दीपावली महोत्सव, 14 नवंबर, 2020

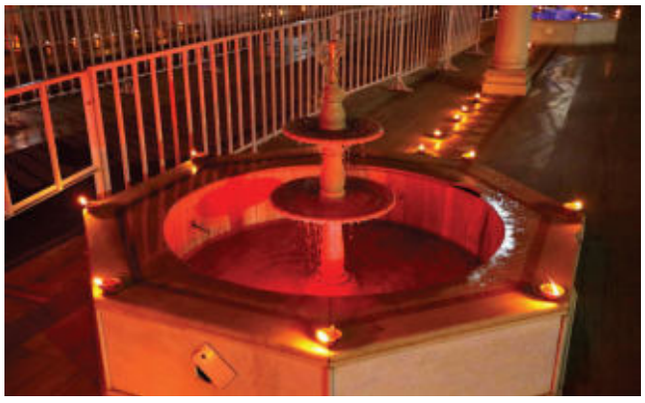

परम कृपालु गोवर्धन महाराज की जय

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम, श्री सिद्धदाता आश्रम में गोवर्धन पूजा का त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्रीगुरु महाराज जी ने विधिवत पूजा अर्चना की और उपस्थित श्रद्धालओं को आशीर्वाद एवं प्रसाद किया। उन्होंने श्री गोवर्धन महाराज की पूजा के उपरांत परिक्रमा की। उन्होंने बताया कि श्री गोवर्धन धाम में होने वाली परिक्रमा हमें बताती है कि हमें सदा ही भगवान पर भरोसा रखना चाहिए। वह किसी न किसी रूप में हम पर कृपा अवश्य ही करते हैं। उन्होंने बताया कि भगवान की पूजा आराधना सदा ही सुख देने वाली है।

श्री गोवर्धन पूजन, 15 नवंबर, 2020

गावो विश्वस्य मातरः

श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा संचालित श्री नारायण गौशाला में श्री गोपाष्टमी का पर्व पूरी विधि विधान के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आश्रम के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने गौवंश का पूजन किया और उन्हें हरा चारा आदि प्रदान किया। श्री गुरु महाराज ने उपस्थित भक्तों एवं सेवादारों को बताया कि गौ सेवा से जीवन में अनेक सकारात्मक बदलावों को हम प्राप्त कर सकते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने गौ सेवा कर हमें स्पष्ट संदेश दिया है। हमें उसे समझना चाहिए।

गोपाष्टमी पर्व, 22 नवंबर, 2020

इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा से श्री सिद्धदाता आश्रम फरीदाबाद पहुंचने का मार्ग

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से श्री सिद्धदाता आश्रम फरीदाबाद पहुंचने का मार्ग

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)

मुख्य पर्व एवं अन्य कार्यक्रम-2021

01 - 01 - 2021	ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी का जन्मदिवस एवं नववर्ष उत्सव
16 - 02 - 2021	बसंत पंचमी
11 - 03 - 2021	महाशिवरात्रि
28 - 03 - 2021	होली महोत्सव
29 - 03 - 2021	होली रंगवाली
18 - 04 - 2021	स्वामी श्री रामानुजाचार्य जयंती
21 - 04 - 2021	रामनवमी
27 - 04 - 2021	श्री हनुमान जयंती
18 - 05 - 2021	ब्रह्मोत्सव
22 - 05 - 2021	स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज की पुण्यतिथि
25 - 05 - 2021	श्री नृसिंह जयंती
27 - 05 - 2021	स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज का जन्मदिवस एवं आश्रम का स्थापना दिवस (आनंदोत्सव)
24 - 07 - 2021	गुरु पूर्णिमा
06 - 08 - 2021	श्रावण शिवरात्रि
22 - 08 - 2021	रक्षाबंधन
30 - 08 - 2021	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
07 - 10 - 2021	शारदीय नवरात्र प्रारंभ
14 - 10 - 2021	दशहरा पर्व
04 - 11 - 2021	दीपावली
05 - 11 - 2021	अन्नकूट गोवर्धन पूजा
11 - 11 - 2021	गोपाष्टमी पर्व

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

श्री सिद्धदाता आश्रम

समय सारणी

1 नवम्बर से 28 फरवरी शीत काल

प्रातः	5.30 से 6:00	बजे	मंगला आरती
प्रातः	6:00 से 7:00	बजे	आराधना
प्रातः	7:00 से 7:15	बजे	अर्चना
प्रातः	7:15 से 7:30	बजे	बाल भोग
प्रातः	7:30 से 8:00	बजे	शृंगार व आरती
प्रातः	8:00 से 11:45	मध्याह्न	दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न	11:45 से 12:15	बजे	आराधना व राजभोग
मध्याह्न	12:15 से 1:00	बजे	दरबार /देव दर्शन
मध्याह्न	1:00 से 4:00	बजे	विश्राम
सायं	4:00 से 5:15	बजे	दरबार/ देव दर्शन
सायं	5:15 से 5:45	बजे	आराधना
सायं	5:45 से 6:10	बजे	अर्चना
सायं	6:10 से 6:30	बजे	राजभोग
रात्रि	6:30 से 8:15	बजे	आरती व दर्शन
रात्रि	8:15 से 8:30	बजे	शयन भोग व दर्शन
रात्रि	8:30		विश्राम

2 मार्च से 31 अक्टूबर ग्रीष्म काल

प्रातः	5.30 से 6:00	बजे	मंगला आरती
प्रातः	6:00 से 7:00	बजे	आराधना
प्रातः	7:00 से 7:15	बजे	अर्चना
प्रातः	7:15 से 7:30	बजे	बाल भोग
प्रातः	7:30 से 8:00	बजे	शृंगार व आरती
प्रातः	8:00 से 11:45	मध्याह्न	दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न	11:45 से 12:15	बजे	आराधना व राजभोग
मध्याह्न	12:15 से 1:00	बजे	दरबार /देव दर्शन
मध्याह्न	1:00 से 4:00	बजे	विश्राम
सायं	4:00 से 6:15	बजे	दरबार/ देव दर्शन
सायं	6:15 से 6:45	बजे	आराधना
सायं	6:45 से 7:10	बजे	अर्चना
सायं	7:10 से 7:30	बजे	राजभोग
रात्रि	7:30 से 8:45	बजे	आरती व दर्शन
रात्रि	8:45 से 9:00	बजे	शयन भोग व दर्शन
रात्रि	9:00		विश्राम

आश्रम द्वारा संचालित गतिविधियां

स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय
नारायण गौशाला
पुस्कालय
अतिथि गृह
सत्संग भवन
यज्ञशाला
औषधालय
भोजनालय

आश्रम में निम्न लिखित कार्य वर्जित हैं

धूम्रपान करना
मदिरापान करना
अस्त्र/शस्त्र लाना
चमड़े की वस्तु लाना
जूते व चप्पल लाना
मन्दिर में फोटो खींचना

प्रातः 8:00 बजे चाय व गोष्ठी प्रसाद
दिन में भोजन का समय 1:00 बजे
सायं 5:00 बजे चाय प्रसाद
रात्रि में भोजन का समय 8:00 बजे

नोट : मन्दिर खुलने के समय ही प्रवेश की अनुमति है

विशेष : अपने वाहन व सामान की सुरक्षा स्वयं करें।

श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य
स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)

सूरजकुंड रोड, सेक्टर-44, फरीदाबाद - 121012, हरियाणा (भारत) - दूरभाष : 0129-2419717, 2419555, 9910907109

website: www.shrisidhdataashram.org OR www.shrisda.org :
Like us on www.facebook.com/ShriSidhdataAshram, email: info@shrisidhdataashram.org